

## मदद लेने का साधन है हिम्मत

27.8.69

(सन्तरी दादी के तन द्वारा)

आज छोटे बगीचे में सैर करने आये हैं। रुहानी बच्चों से सम्मुख मिलने आये हैं। बाप समझते हैं हमारे यह नूरे रत्न हैं। नयनों का नूर बच्चे हमेशा रूहे गुलाब सदृश्य खुशबू देते रहते हैं। इतनी बच्चों में हिम्मत है, जितना बाप का फेथ है? आज बच्चों ने बुलाया नहीं है। बिना बुलाये बाप आये हैं। यह अनादि बना बनाया कायदा है। संगम पर सजाने के लिए बाप को बिना पूछे ही आना पड़ता है। आज बच्चों से प्रश्न पूछते हैं, आज बगीचे में जो बैठे हैं अपने को ऐसा फूल समझते हैं जो कि गुलदस्ते में शोभा देने लायक हो? राखी हरेक को बांधी हुई है? राखी बन्धन का रहस्य क्या है?

तो आज बाप-बच्चों से मिलने आये हैं। बहुत बड़ी जिम्मेवारी उठाई है। छोटी-छोटी जवाबदारी जो उठाते हैं, तो भी कितना थक जाते हैं। सारी सृष्टि का बोझा किन पर है? बोझा सिर पर चढ़ाना भी है तो उतारना भी है। परन्तु थकना नहीं है। बच्चों को थकावट क्यों फील होती है? क्योंकि अपने को रूहै गुलाब रूह नहीं समझते हैं। रूह समझें तो देह से न्यारा और प्यारा रहें। जैसे बाप है, वैसे ही बच्चे हों। जितनी हिम्मत है तो उतनी ही मदद भी बाप दे ही रहे हैं। हिम्मत से मदद मिलती है और मदद से ही पहाड़ उठता है। कलियुगी मिट्टी के पहाड़ को उठाकर सतयुगी सोना बनाना है। कैसे बनाना है? यही गुंजाइश प्रश्न में भी भरी हुई है। तो आज थोड़े समय के लिए मुलाकात करने बाप को आना पड़ा। बाप को इच्छा होती है? वह तो इच्छा से न्यारा इच्छा रहित है। फिर भी इच्छा क्यों? आप सभी इच्छा रहित बने तो बाप को इच्छा हुई। आप बच्चे जानते नहीं हो कि बाप किसी को कैसे सम्भालते थे? और सम्भाल भी रहे हैं। इतनी जवाबदारी कैसे रम्ज से सम्भाल कर बाप की भी इच्छा पूरी की तो अब बच्चों की कभी कर रहे हैं। इसको ही राझू-रम्जबाज कहा जाता है। बाप को तो हर एक बच्चे की इच्छा रखनी पड़ती है। रखकर फिर भी कहीं पर अपनी चलानी होती है। बच्चों की क्यों रखता है? बच्चे सभी नयनों के नूर हैं। इसलिए ही पहले बच्चे फिर बाप। सिरमौर को कभी सिर पर भी बिठाना पड़ता है। बच्चों को खुशी दिलानी होती है। पुरुषार्थ करते-करते ठण्डे पड़ जाते हो तो फिर पुरुषार्थ को आगे बढ़ाने की कोशिश करो। तब प्रश्न पूछ रहे हैं कि कंगन पूरा बंधा हुआ है? धरत पड़े, पर धर्म न छोड़िये। आज के दिन तो विरोधी भी दुश्मन से दोस्त बन जाते हैं।

बच्चों को सदैव कदम आगे बढ़ाना है। ताज तख्त जो मिलने वाला है, नज़र उस पर हो। सिर्फ कहने तक ही नहीं कि हम तो यह बनेंगे परन्तु अभी तो करने तक धारणा रखनी है। लक्ष्मी नारायण कैसे चलते हैं, कैसे कदम उठाते हैं, कैसे नयन नीचे ऊपर करते हैं, वैसी चलन हो तब लक्ष्मी नारायण बनेंगे। अभी नयन ऊपर करोगे तो देह अभिमान आ जायेगा कि मेरे जैसा तो कोई नहीं है। मेरा तेरा आ जायेगा। भक्ति मार्ग में भी कहते हैं नम्रता मनुष्यों के नयन नीचे कर देती है। हर एक को अपने को सजाना है। सदैव खुशबू देते रहो। लक्ष्य जो मिला है वैसा ही लक्ष्मी नारायण बनना है। राइट रास्ते पर चलना है। कदम आगे-आगे बढ़ाना है। बाबा के पास

आज संदेशी भोग ले आई तो बाबा ने कहा कि बच्चे तो यहाँ पर बैठे ही प्रिन्स बन गये हैं। बाबा की बेगरी टोली भूल गयी है। वैभव तो वहाँ मिलने हैं। संगम पर बेगरी टोली याद पड़ती है। वो ही बाप को प्यारी लगती है। सुदामा के चावलों की वैल्यू है ना। इस टोली में प्यार भरा हुआ है। बनाने वाले ने प्यार भरा है तो बाप और ही प्यार भरकर बच्चों को खिलाते हैं। (सिन्धी हलुवा खिलाया) दीदी सर्विस पूरी करके आई है। सब ठीक थे, कायदे सिर चल रहा है सब? डरने की कोई बात नहीं है। समय की बलिहारी है। बच्चों को पुरुषार्थ तो हर बात का करना है। समय को देखकर अविनाशी ज्ञान यज्ञ को जो कुण्ड कहा जाता है उसको भरना है। स्वाहा कर देना है। यज्ञ तो हमेशा कायम ही रहना है। वह यज्ञ तो 10-12 दिन किया फिर जैसे का वैसा हो जाता है। यह तो अविनाशी यज्ञ है। शिवबाबा का भण्डारा भरपूर काल कंटक दूर। दूर तब होंगे जबकि नई दुनिया में जायेंगे। सब ठीक ही चलता रहेगा। सिर्फ बच्चों की बुद्धि चुस्त, दूरदेशी होनी चाहिए। दूरदेशी करने के लिए ताज तख्त तो दे ही दिया है। अच्छा—

### याद के आधार पर यादगार

15.9.69

आवाज़ से परे जाना है वा बाप को भी आवाज़ में लाना है? आप सब आवाज से परे जा रहे हो। और बापदादा को फिर आवाज़ में ला रहे हो। आवाज में आते भी अतीन्द्रिय सुख में रह सकते हो तो फिर आवाज़ से परे रहने की कोशिश क्यों? अगर आवाज़ से परे निराकार रूप में स्थित हो फिर साकार में आयेंगे तो फिर औरों को भी उस अवस्था में ला सकेंगे। एक सेकेण्ड में निराकार-एक सेकेण्ड में साकार। ऐसी ड्रिल सीखनी है। अभी-अभी निराकारी, अभी-अभी साकारी। जब ऐसी अवस्था हो जायेगी तब साकार रूप में हर एक को निराकार रूप का आपसे साक्षात्कार हो। अपने आप का साक्षात्कार किया है? ब्राह्मण रूप में तो हो ही हो। अगर अपना साक्षात्कार किया है तो क्या अपने नम्बर का साक्षात्कार किया है? और कोई भी आपका रूप है जिसका साक्षात्कार किया है? अपने असली रूप को भूल गए? वर्तमान समय आप किस रूप से युक्तियुक्त सर्विस कर सकते हो? जगतमाता।

आज तो विशेष माताओं का ही प्रोग्राम है ना। रहना माता रूप में ही है सिर्फ जगतमाता बनना है। माता बनने बिना पालना नहीं कर सकते आज माताओं को किसलिए बुलाया है? वर्से के अधिकारी बन चुकी हो कि बनना है? वारिस बन चुकी हो कि बनने आए हो? वारिस से वर्सा तो है ही कि वारिस बनी हो मगर वर्सा नहीं मिला है? वर्से के हकदार तो बन ही चुके हो। अब किस कार्य के लिए आई हो? बापदादा ने ज़रूर किसी विशेष कार्य के लिए बुलाया होगा? स्टडी तो अपने सेवाकेन्द्रों पर भी करते रहते हो। कोर्स भी पूरा कर चुके हो। मुख्य ज्ञान की पढ़ाई का भी पता पड़ गया है। बाकी क्या रह गया है? अब नष्टोमोहा बनना है। नष्टोमाहा तब बनेगी जबकि सच्ची स्नेही होगी। जैसे कोई भी चीज को आग में डालने के बाद उसका रूप-रंग सब बदली हो जाता है। तो जो भी थोड़े आसुरी गुण, लोक-मर्यादायें है, कर्मबन्धन की रस्सियां, ममता के धागे जो बंधे हुए हैं उन सबको जलाना है। इस स्नेह की अग्नि में पड़ने से यह सब छूट जायेगा। तो अपना रंग-रूप सब बदलना है। इस लगन की अग्नि में पड़कर परिवर्तन लाने के लिए तैयार हो? जो चीज जल जाती है वो फिर खत्म हो जाती है। देखने में नहीं आती।

ऐसे अपने को परिवर्तन में लाने की हिम्मत है? आप सबकी यादगार अब तक भी कायम है। आपकी यादगार का आधार किस बात पर है? जितनी-जितनी याद है उतनी-उतनी सबकी यादगार बनी हुई है। अब तक भी कायम है। आपकी याद के आधार पर सबकी यादगार बनी हुई है। अगर याद कम है तो यादगार भी ऐसा ही होगा। अगर यादगार कायम रखने का प्रयत्न करना है तो पहले याद कायम रखो। फिर उस आधार पर यादगार बनना है। हर एक के विशेष गुण पर हर एक का ध्यान जाना चाहिए। एक-एक का जो विशेष गुण है वो हर एक अगर अपने में धारण करे तो क्या बन जायेंगे? सर्वगुण सपन्न। जैसे आत्मा रूप को देखते हो ना। तो फिर जब कर्म में आते हो तो हर एक के विशेष गुण तरफ देखो। तो फिर और बातें भूल जायेंगी। गुणों को ही अपने में भरने का प्रयत्न करना है।

आज माताओं को चन्द्रमा का टीका लगाया है। चन्द्रमा के जो गुण हैं वो अपने में धारण तो करने ही हैं परन्तु चन्द्रमा का सूर्य के साथ सम्बन्ध भी गहरा होता है। तो चंद्रमा जैसा सम्बन्ध और गुण धारण करने हैं। और चंद्रमा का कर्तव्य कौन-सा है? शीतलता के साथ-साथ रोशीनी भी देता है। अच्छा अब विदाई।

### त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी और त्रिलोकीनाथ बनने की युक्तियां

18.9.69

किसको देखते हो? आकार को देखते वा अव्यक्त को देखते हो? अगर अपनी वा औरों की आकृति को न देख अव्यक्त को देखेंगे तो आकर्षण मूर्त बनेंगे। अगर आकृति को देखते तो आकर्षण मूर्त नहीं बनते हो। आकर्षण मूर्त बनना है तो आकृति को मत देखो। आकृति के अन्दर जो आकर्षण रूप है उसको देखने से ही अपने से और औरों से आकर्षण होगा। तो अब के समय यही अव्यक्त सर्विस रही हुई है। व्यक्त में क्यूं आ जाते हो? इसका कारण क्या है? अव्यक्त बनना अच्छा भी लगता फिर भी व्यक्त में क्यूं आते हो? व्यक्त में आने से ही व्यर्थ संकल्प आते हैं और व्यर्थ कर्म होते हैं तो व्यक्त से अव्यक्त बनने में मुश्किल क्यूं लगती है? व्यक्त में जल्दी आ जाते हैं अव्यक्त में मुश्किल से टिकते हैं। इसका कारण क्या है? भूल जाते हैं। भूलते भी क्यूं हैं? देह अभिमान क्यूं आ जाता है? मालूम भी है, जानते भी हो, अनुभव भी किया है, कि व्यक्त में और अव्यक्त में अन्तर क्या है? नुकसान और फायदा क्या है? यह भी सब मालूम है। जब तुम याद में बैठते हो तो देह-अभिमान से देही-अभिमानी में कैसे स्थित होते हो? क्या कहते हो? बात तो बड़ी सहज है। जो आप सबने बताया वो भी पुरुषार्थ का ही है। लेकिन जानते और मानते हुए भी देह अभिमान में आने का कारण यही है जो देह का आकर्षण रहता है। इस आकर्षण से दूर हटने के लिए कोशिश करनी है। जैसे कोई खींचने वाली चीज होती है तो उस खिंचाव से दूर रखने के लिए क्या किया जाता है? चुम्बक होता है तो ना चाहते हुए भी उस तरफ खिंच आते हैं। अगर आपको उस आकर्षण से किसी को दूर करना है तो क्या करेंगे? कोई चीज ना चाहते हुए भी उसको खिंचती है और आपको उस चीज से दूर उसे करना है तो क्या करेंगे? वा तो उनको दूर ले जायेंगे या तो बीच में ऐसी चीज रखेंगे जो वो आकर्षण न कर सके। यह दो तरह से होता है या तो दूर कर देना है या दोनों के बीच में

ऐसी चीज डाल देंगे तो वो दूर हो जाते इसी प्रकार यह देह अभिमान या यह व्यक्त भाव जो है यह भी चुम्बक के माफिक ना चाहते हुए भी फिर उसमें आ जाते हैं। बीच में क्या रखेंगे? स्वयं को जानने के लिए क्या आवश्यकता है जिससे स्वयं को और सर्वशक्तिमान बाप को पूर्ण रीति जान सकते हो? एक ही शब्द है। स्वयं को और सर्वशक्तिमान बाप को पूर्ण रीति जानने के लिए संयम चाहिये। जब संयम को भूलते हो तो स्वयं को भी भूलते और सर्वशक्तिमान को भी भूलते हैं। अलबेलेपन का संस्कार भी क्यों आता है? कोई न कोई संयम को भूलते हो। तो संयम जो है वो स्वयं को और सर्वशक्तिमान बाप को समीप लाता है। अगर संयम में कमी है तो स्वयं और सर्वशक्तिमान से मिलन में कमी है। तो बीच की जो बात है वह संयम है। कोई ना कोई संयम जब छोड़ते हो तो यह याद भी छूटती है। अगर संयम ठीक है तो स्वयं की स्थिति ठीक है और स्वयं की स्थिति ठीक है तो सब बातें ठीक हैं। तो यह देह की जो आकर्षण है वो बार-बार अपनी तरफ आकर्षित करती है। अगर बीच में यह संयम (नियम) रख दो तो यह देह की आकर्षण आकर्षित नहीं करेगी। इसके लिये तीन बातें ध्यान में रखो। एक स्वयं की याद। एक संयम और समय। यह तीन बातें याद रखेंगे तो क्या बन जायेंगे? त्रिनेत्री त्रिकालदर्शी-त्रिलोकी-नाथ। संगमयुग का जो आप सबका टाइटिल है वो सब प्राप्त हो जावेगा। स्वयं को जानने से सर्वशक्तिमान बीच में आ ही जाता है। तो इन तीनों बातों तरफ ध्यान दो। कोई भी चित्र को देखते हो (चित्र अर्थात् शरीर) तो चित्र को नहीं देखो। लेकिन चित्र के अन्दर जो चेतन है उसको देखो। और उस चित्र के जो चरित्र हैं उन चरित्रों को देखो। चेतन और चरित्र को देखेंगे तो चरित्र तरफ ध्यान जाने से तो चित्र अर्थात् देह के भान से दूर हो जायेंगे। एक-एक में कोई ना कोई चरित्र जरूर है। क्योंकि ब्राह्मण कुल भूषण ही चरित्रवान है। सिर्फ एक बाप का ही चरित्र नहीं है। लेकिन बाप के साथ जो भी मददगार हैं उनकी भी हर एक चलन चरित्र है। तो चरित्र को देखो और चेतन वा विचित्र को। तो यह कहें विचित्र और चरित्र। अगर यह दो बातें देखो तो देह की आकर्षण जो ना चाहते हुये भी खींच लेती है वो दूर हो जायेगी। वर्तमान समय यही मुख्य पुरुषार्थ होना चाहिए। जबकि आप लोग कहते ही हो कि हम बदल चुके हैं। तो फिर यह सब बातें ही बदल जानी चाहिए फिर पुराने संस्कार और यह पुरानी बातें क्यूं? अपने को बदलने लिए पहले यह जो भाव हैं, उस भाव को बदलने से सब बातें बदल जायेंगी।

आसक्ति में आ जाते हैं ना। तो आसक्ति के बजाय अगर अपने को शक्ति समझो तो आसक्ति समाप्त हो जायेगी। शक्ति न समझने से अनेक प्रकार की आसक्तियां आती हैं।

कोई भी आसक्ति चाहे देह की, चाहे तो देह के पदार्थों की कोई भी आसक्ति उत्पन्न हो तो उस समय यही याद रखो कि मैं शक्ति हूँ। शक्ति में फिर आसक्ति कहां? आसक्ति के कारण उस स्थिति में आ नहीं सकते हैं। तो आसक्ति को खत्म कर दो। इसके लिए यही सोचो कि मैं शक्ति हूँ माताओं को विशेष कौनसा विघ्न आता है? (मोह) मोह किस कारण आता है? मोह मेरा से होता है। लेकिन आप सबका वायदा क्या है? शुरू-शुरू में आप सब-जब आये तो आपका वायदा क्या था? मैं तेरी तो सब कुछ तेरा। पहला वायदा ही यह है। मैं भी तेरी और मेरा सब कुछ भी तेरा। सो फिर भी मेरा कहाँ से आया? तेरे को मेरे से मिला देते हो। इससे क्या सिद्ध हुआ कि पहला वायदा ही भूल जाते हो। पहला-पहला वायदा ही सब यह कहते हैं:-

जो कहोगे, वो करेंगे, जो खिलायेंगे, जहाँ बिठायेंगे ....। यह जो वायदा है, वह वायदा याद है? तो बाप तुमको अव्यक्त वतन में बिठाते हैं। तो आप फिर व्यक्त वतन में क्यूं आ जाते हो? वायदा तो ठीक नहीं निभाया। वायदा है जहाँ बिठायेंगे वहाँ बैठेंगे। बाप ने तो कहा नहीं है कि व्यक्त वतन में बैठो। व्यक्त में होते अव्यक्त में रहो। पहला-पहला पाठ ही भूल जायेंगे तो फिर ट्रेनिंग क्या करेंगे। ट्रेनिंग में पहला पाठ तो पक्का करवाओ। यह याद रखो कि जो वायदा किया है उसको निभाकर दिखायेंगे। जो मातायें ट्रेनिंग में आई हुई हैं, आप सब सरेण्डर हो? जब सरेण्डर हो चुके हो तो फिर मोह कहाँ से आया। जब कोई जलकर खत्म हो जाता है तो फिर उसमें कुछ रहता है? कुछ भी नहीं। अगर कुछ है तो इसका मतलब कि तीर लगा है लेकिन पूरे जले नहीं हैं। मरे हैं, जले नहीं हैं। रावण को भी पहले मारते हैं फिर जलाते हैं। तो मरजीवा बने हो परन्तु जलकर एकदम खाक बन जाएं, वो नहीं बने हैं। सरेण्डर का अर्थ तो बड़ा है। मेरा कुछ रहा ही नहीं। सरेण्डर हुआ तो तन-मन-धन सब कुछ अर्पण। जब मन अर्पण कर दिया तो उस मन में अपने अनुसार संकल्प उठा ही कैसे सकते हैं? तन से विकर्म कर ही कैसे सकते हैं? और धन को भी विकल्प अथवा व्यर्थ कार्यों में लगा ही कैसे सकते हो? इससे सिद्ध है कि देकर फिर वापिस ले लेते हैं। जबकि तन, मन, धन दे दिया है तो मन में क्या चलाना है वो भी श्रीमत मिलती है, तन से क्या करना है, वो भी मत मिलती है, धन से क्या करना है सो भी मालूम है। जिनको दिया उनकी मत पर ही तो चलना होगा। जिसने मन दे दिया उसकी अवस्था क्या होगी? मनमनाभव। उसका मन वहाँ ही लगा रहेगा। इस मंत्र को कभी भूलेंगे नहीं। जो मनमनाभव होगा उसमें मोह हो सकता है? तो मोहजीत बनने के लिए अपने वायदे याद करो। यहाँ ट्रेनिंग से जब निकलेंगे तो आप कौन सा ठप्पा लगवा कर निकलेंगे? (मोहजीत का) अगर मोहजीत का ठप्पा लग जायेगा तो सीधी पोस्ट ठिकाने पर पहुंचेगी। और सीधा ठप्पा नहीं होगा तो पोस्ट ठिकाने पर नहीं पहुंचेगी। इसलिए ही ठप्पा जरूर लगाना है। इन माताओं का ही फिर समर्पित समारोह करेंगे। उसमें बुलायेंगे भी उनको जिन्होंने ठप्पा लगाया होगा। मोहजीत वालों का ही सम्मेलन करेंगे। इसलिये जल्दी-जल्दी तैयार हो जाओ।

### पूरे कोर्स का सार — कथनी-करनी एक करो

28.9.69

किस रूप में मुलाकात कर रहे हो? अव्यक्त रूप से वा स्नेह रूप से वा शक्ति रूप से? बाप रूप से तो मुलाकात कर ही रहे हो। लेकिन स्नेहरूप में वा शक्तिरूप में वा अव्यक्त रूप में? वर्तमान कौनसा विशेष रूप है? सारे दिन में इन तीनों रूपों में से ज्यादा कौनसा रूप रहता है? इन तीनों से श्रेष्ठ कौनसा है? (हर एक ने अपना समाचार सुनाया) अब सिर्फ प्रश्न पूछते हैं फिर स्पष्ट करेंगे। अब सबने जो एक्स्ट्रा ट्रेनिंग कोर्स लिया है, इनमें सबसे पावरफुल प्वाइंट कौन सी ली है? जो प्वाइंट आगे विघ्नों को एक सेकेण्ड में खत्म कर दे। हर एक ने भिन्न-भिन्न प्वाइंट तो सुनाई अब जिन्होंने भी प्वाइंट सुनाई है — वो फिर भी अपना अनुभव लिख भेजें कि इस प्वाइंट को यूज करने से कितने समय में विघ्न दूर हुआ है? जैसे कोई दवाई एक यूज करके देखता है फिर अनेकों को उसका लाभ लेने में सहज होता है। तो यह सब भिन्न-भिन्न प्वाइंट जो निकली हैं उन सब का सार दो शब्दों में याद रखो जिसमें आपकी सब बातें आ जायें। यह

जो अब कोर्स किया है उसका मुख्य सार दो अक्षरों में याद रखना है कि जो कहते हैं वो करना है। कहते हैं हम ब्रह्माकुमारी हैं। हम बापदादा के बच्चे आज्ञाकारी हैं। मददगार हैं। जो भी बातें कहते हो वो प्रैक्टिकल करना है। कहना अर्थात् करना। कहने और करने में अन्तर नहीं हो। यही आपके कोर्स का सार है। कहते तो आप कई वर्षों से हो विकार बुरी चीज है, औरों को भी सुनाते हो लेकिन खुद घर गृहस्थी से न्यारे होकर नहीं चलते हो। तो अपना ही कहना और करना बदल जाता है। इसलिए आज से यह बात याद रखो। जो कहेंगे सो करेंगे। जो भी सोचते हो अथवा दुनिया को भी जो कहते हो वो करके दिखाना है। सिर्फ कहना ही नहीं। करना है। अब सर्विस जो रही है वो कहने से नहीं होगी। लेकिन अपनी करनी से। कथनी, करनी और रहनी कहते हैं ना। जो भी सारे दिन में आप कर्म करते हैं। घर में रहते हो। तो कथनी करनी और रहनी तीनों की एक हो तब कर्मातीत अवस्था में जल्दी से जल्दी पहुंच सकेंगे। हर समय यह चेक करो जो कहती हूँ वो करती हूँ? कहते हो हम सर्वशक्तिमान की सन्तान हैं और करते क्या हो? कमजोरी की बात। आज से यह पक्का करो कि जो कहूँगी सो करूँगी। जो खुद ऐसे बनेंगे उनको देख कर और भी आपे ही करेंगे। आपको मेहनत करने की जरूरत नहीं रहेगी। अब तक तो यही उलहाने मिलते रहते हैं कि कहते एक हैं करते तो दूसरा हो। उलाहनों को खत्म करना है। उलाहना खत्म हो फिर क्या बन जायेंगे? अल्लाह (ऊंच) बन जायेंगे। जितना अल्लाह बनेंगे तो फिर ना चाहते हुए नाम बाला होगा। तो किये हुए कोर्स की यह शिक्षा है मुख्य सार।

सबसे खौफनाक मनुष्य कौनसा होता है जिनसे सब डर जाते हैं? दुनिया की बात तो दुनिया में रही। लेकिन इस दैवी परिवार के अन्दर सबसे खौफनाक, नुकसान कारक वो है जो अन्दर एक और बाहर से दूसरा रूप रखता है। वो पर-निन्दक से भी जास्ती खौफनाक है। क्योंकि वो कोई के नजदीक नहीं आ सकता। स्नेही नहीं बन सकता। उनसे सब दूर रहने की कोशिश करेंगे। इसलिए इस भट्टी में आप लोगों को यह शिक्षा मिली। इसको सच्चाई और सफाई कहा जाता है। सफाई किस बात में? सच्चाई किस बात में? इनका भी बड़ा गुह्य रहस्य है। सच्चाई जो करें वो ही वर्णन करें। जो सोचें वहीं वर्णन करें। बनावटी रूप नहीं। मन्सा-वाचा-कर्मणा तीनों रूप में चाहिए। अगर मन में कोई संकल्प उत्पन्न होता है तो उसमें भी सच्चाई चाहिए और सफाई। अन्दर में कोई भी विकर्म का किचरा नहीं हो। कोई भी भाव-स्वभाव पुराने संस्कारों का भी किचरा नहीं हो। जो ऐसी सफाई वाला होगा वो ही सच्चा होगा और जो सच्चा होता है उनकी परख क्या होती है? जो सच्चा होगा वह सबका प्रिय होगा। उसमें भी सबसे पहले तो वह प्रभु-प्रिय होगा। सच्चे पर साहब राजी होता है। तो पहले प्रभुप्रिय होगा। फिर दैवी परिवार का प्रिय होगा उसको कोई भी ऐसी नज़र से नहीं देखेगा। उनकी नज़र, वाणी में, उनके कर्म में ऐसी परिपक्वता होगी जो कभी भी ना खुद ही डगमग होगा ना ही दूसरों को करेगा। जो सच्चा होगा वह प्रिय होगा। कई समझते हैं कि हम तो सच्चे हैं लेकिन मुझे समझा नहीं जाता है। सच्चा हीरा कभी छिप थोड़ेही सकता है। इसलिए ही यह समझना मैं ऐसा हूँ परन्तु मुझे ऐसा समझा नहीं जाता है — यह भी सच्चाई नहीं है। सच्चाई कभी छिप नहीं सकती है और सच्चे सबके प्रिय बन जाते हैं। कई यह भी समझते हैं कि हम नज़दीक नहीं हैं इसलिए ही प्रख्यात नहीं हैं। लेकिन जो सच्चे और पक्के होते हैं वो दूर होते हुए भी अपनी परख छिपा नहीं सकते। कोई कितना भी दूर

हो लेकिन बापदादा के नज़दीक होगा। जो बाप के नज़दीक हैं वो सबके नज़दीक हैं। तो सच्चा बनना। सफाई का सबूत चलन में दिखता है। सिर्फ समझना ही नहीं हैं लेकिन कर्म में करके दिखाना है। जो कर्म हो वो भी दूसरों के सर्विस के निमित्त हो। अपनी मन्सा, वाचा, कर्मणा को चेक करो। आप अपने को क्या कहलवाते हो? और बापदादा भी आप सभी को क्या टाइटिल देते हैं, वह याद है? सर्विसएबुल बच्चे। तो जो सर्विसएबुल हैं उनका हर संकल्प, हर शब्द, हर कर्म सर्विस ही करेगा। भाषण करना, किसी को समझाना सिर्फ यही सर्विस नहीं है। परन्तु जो सर्विसएबुल हैं वो हर सेकेण्ड सर्विस ही करते रहते हैं। तो अपने को देखना है कि हमारी हर सेकेण्ड सर्विसएबुल चलन होती है? वा कहाँ डिससर्विस वाली चलन तो नहीं है? जब नाम सर्विसएबुल हैं तो कर्म भी ऐसा ही होना चाहिए। इसलिए जो कहना है वो करना भी है। यह याद रखने से पुरुषार्थ में सहज सफलता पायेंगे। कई बहुत खुश होते हैं कि हमने इतने जिज्ञासु समझाये, इतने भाषण किये, बहुत सर्विस की लेकिन वो भी हद की सर्विस है। अब तो बेहद की सर्विस करनी है। मन्सा-वाचा-कर्मणा तीनों रूपों से बेहद की सर्विस हो — उसको कहा जाता है सर्विसएबुल। अब अपने को देखो कि हम सर्विसएबुल बने हैं? ऐसा सर्विसएबुल फिर स्नेही भी बहुत होगा। अब ऐसा सभी ने ठप्पा लगाया है वा कोई साहस भी रख रहे हैं? जब करना ही है तो गोया ठप्पा लग ही गया। अपने में शक क्यूं रखते हो? कि ना मालूम परीक्षा में पास हों वा फेल हो। होशियार स्टूडेन्टस् सदैव निश्चय से कहते हैं कि हम तो नम्बरवन आयेंगे। अगर पहले से ही अपने में संशय रखेंगे तो संशय की रिजल्ट क्या होती है? फिर विजयी बन ना सकें। अगर जरा भी संशय रखा तो विजयी नहीं बनेंगे। जब तक निश्चय नहीं है। आप लोगों ने शुरू से ही दाँव लगाया है कि वर्सा लेके ही छोड़ेंगे या सोचा था कि देखेंगे? दाँव लगाया गोया बन ही गये।

जब अपने को निश्चय बुद्धि कहते हैं तो कोई भी बात में ना बाप में, ना बाप की नालेज में, ना बाप के परिवार में संशय वा विकल्प उठना चाहिए। हम शिवबाबा के हैं तो फिर सर्वशक्तिमान के बच्चे निश्चय बुद्धि हैं। यह कौन बोलता है? सर्वशक्तिवान के बच्चे बोलते हैं। निश्चय रखने से ही विजय हो जायेगी। भल करके अन्दर समझो ना मालूम क्या होगा? परन्तु फिर भी निश्चय में विजय हो जायेगी। अगर निश्चय नहीं है तो आपका कर्म भी वैसा ही चलेगा। निश्चय रखेंगे कि हमको करना ही है तो कर्म भी वैसा ही होगा। अगर ख्याल करेंगे कि अच्छा देखेंगे, करेंगे। तो कर्म भी ढीला ही चलेगा। कभी भी अपने में कमज़ोरी की, संशय की फीलिंग नहीं आनी चाहिए। कमज़ोरी के संकल्प ही संशय है। अब कहाँ तक यह पुराने संस्कार और संकल्प रहे। पुराने संस्कार भी नहीं। संस्कार तो मोटी चीज़ है। लेकिन पुराने संकल्प खत्म होने चाहिए। तब कहेंगे भट्टी से पककर निकल रहे हैं। भट्टी का अर्थ ही क्या है? भट्टी में सारा जलकर खत्म हो जाते हैं। रूप ही बदल जाता है। कोई भी चीज़ भट्टी में डालेंगे तो उनका रूप, गुण आदि सब बदल जायेगा। आप भी भट्टी करते हैं तो रूप, गुण बदलना चाहिए। ईट जब पकती है तो पहले मिट्टी होती है फिर पकने से उनका रूप गुण बदल जाता है। और कर्तव्य भी बदल जाता है। इसी रीति अपना रूप गुण और कर्तव्य तीनों ही बदलते जाना है। यह है भट्टी की रिजल्ट। अब बताओ कि बदल लिया है? वा बदलेंगे? आपके उमंगों के साथ बापदादा की भी मदद है।

जितना आप अपने में निश्चय रखेंगे उतना बापदादा भी अवश्य मददगार बनते हैं। स्नेही को अवश्य सहयोग मिलता है। किससे भी सहयोग लेना है, तो स्नेही बनना है। स्नेही को सहयोग की मांगनी नहीं करनी पड़ती है। बापदादा के स्नेही बनेंगे, परिवार के भी स्नेही बनेंगे। तो सभी का सहयोग स्वतः ही प्राप्त होगा। मुख्य यही दो बातें हैं निश्चयबुद्धि और नष्टोमोहा, यह तो तिलक माथे पर लगा ही दिया है। सलोगन भी याद रखना है जो कहेंगे वो करेंगे यह है माताओं की सजावट। माताएं श्रृंगार ज्यादा करती हैं ना। तो इन माताओं का श्रृंगार रत्नों से किया जाता है। सबसे चमकने वाला श्रृंगार होता है रत्नों का। सोने में भी रत्न होता है तो जास्ती चमकता है। तो बापदादा ने इन माताओं को रत्नों से श्रृंगारा है। क्योंकि संगम पर सोने से भी ज्यादा हीरा बनना है। जितना-जितना अपने को रत्नों से सजायेंगे उतना ही ना चाहते हुए भी दुनिया की नज़र आपके तरफ जायेगी। दुनिया को कहने की आपको दरकार नहीं होगी कि हमारी तरफ देखो। यह ज्ञान रत्नों का श्रृंगार दूर वालों का भी ध्यान खिचवायेगा। इसलिए इन रत्नों के श्रृंगार को सदा के लिए कायम रखेंगे ऐसा निश्चय करना है।

आज अमृतवेले कोई बच्चे विशेष याद आए जो सकार रूप में ज्यादा साथ रहे हैं, आज विशेष उनकी याद आई क्योंकि आजकल साथ रहने वालों का पुरुषार्थ पहले से बहुत अच्छा है इसलिए पुरुषार्थ के स्नेह में उनकी याद आई। वर्तमान समय मधुबन वालों में परिवर्तन विशेष देखने में आ रहा है। हर स्थान में एक-एक रत्न चमक कर जा रहे हैं। अब एक-एक स्थान से चमका हुआ रत्न फिर जाकर आप समान कैसे बनाते हैं वह अब देखेंगे। कभी भी हिम्मतहीन बोल नहीं बोलने चाहिए। पुरुषार्थहीन व हिम्मतहीन बनना — वह अब जमाना गया। अब तो मददगार बनना है और बनकर दिखाना है। अभी सबके दिल के अन्दर यह रहता है कि हम भी जल्दी ही जायें। आगे तो कहते थे कि संगमयुग में जितना जास्ती रहें उतना ही जास्ती अच्छा है। क्योंकि साकार के साथ में ही संगम के सुहैज थे। अभी तो चाहते हैं कि जहाँ अपना रहबर वहीं हम राही भी चलें। तुम लोगों की चलन वाणी से भी ज्यादा सर्विस करेगी। डबल सर्विस में सफलता होगी तभी डबल ताज मिलेगा। बोलो सिंगल ताजधारी बनना है या डबल? कि बने ही हुए हैं? शक्तिरूप बनने का साधन क्या है? शक्तिरूप तभी बन सकेंगे जब कि अव्यक्त स्थिति होगी। अव्यक्त स्थिति में रहकर भल व्यक्त में आते भी हैं तो सिर्फ सर्विस अर्थ। सर्विस समाप्त हुई तो फिर अव्यक्त स्थिति में रहना ऐसा अभ्यास रखना है।

जो बली चढ़ जाता है उनको रिटर्न में क्या मिलता है? बलि चढ़ने वालों को ईश्वरीय बल बहुत मिलता है। जो सम्पूर्ण स्वाहा होते हैं वही सदा सुहागिन बनते हैं। उनका सुहाग खत्म नहीं होता है। जो सदा सुहागिन होते हैं उनकी अविनाशी बिन्दी सदैव होती है। आत्म-स्थिति में स्थित रहने की बिन्दी सदा सुहागिन को हर समय मस्तिष्क में याद रहती है सदा सुहागिन की और कौनसी निशानी होती है? एक तो बिन्दी दूसरा कंगन होता है, वो है संगम रूपी कंगन। दोनों कभी भी नहीं उतारेंगे। संगम के कंगन उतार देने से सुहाग खत्म हो जाता है। अभी विशेष कमाल की सर्विस करनी है। जो अपने संग से सबको ऐसा रंग लगाओ जो कि कभी उतर नहीं सके। म्यूज़ियम में तो सिर्फ संदेश लेकर चले जाते हैं। लेकिन अब यह ध्यान रखना है कि हमारे संग का रंग इतना तो अविनाशी रहे जो कि कभी भी वह उतर नहीं सके। अभी जम्प देकर आगे जाना



है। पहले था सिर्फ चलने का समय। फिर दौड़ने का समय भी आया। अभी तो है जम्प का समय अगर दौड़ कर पहुँचने की कोशिश करेंगे तो टू लेट हो जायेंगे। जम्प देने में तो समय नहीं लगता। एकरस अवस्था में रहने लिए एक ही शुद्ध संकल्प रखना है। वो कौनसा एक? एक तो स्नेही बनना, दूसरा सर्विसएबुल हूँ। बस। इनके बिना और कोई संकल्प नहीं। सर्विसएबुल को सर्विस का ही संकल्प चलेगा। भट्टी का जो लक्ष्य है कि खुद बदलकर औरों को बदलना है। यह लक्ष्य सदैव याद रखना है। यह है निश्चय की छाप। आप पर कौन सा छाप लगा है? निश्चयबुद्धि, नष्टोमोहा और सर्विसएबुल का। यह त्रिमूर्ति छाप की निशानी लगी हुई है। यह अपनी निशानी कायम रखनी है। आप समान औरों को अपने से भी ऊँच बनाना है। कम नहीं। हम से ऊँचा कोई बने, यह भी तो अपनी ऊँचाई है ना। ओम् शान्ति।

### “सम्पूर्ण - समर्पण की निशानियाँ”

3.10.69

किसको देखते हो? कौन, किसको देख रहे हो? (दो तीन ने अपना-अपना विचार सुनाया) आज बापदादा अपने पूर्ण परवानों को देख रहे हैं। क्योंकि कहाँ तक परवाने बने हैं वो देखने आये हैं। वैसे तो परवाने शमा के पास जाते हैं लेकिन यहाँ तो शमा भी परवानों से मिलती है। आपको मालूम है जो सम्पूर्ण परवाने होते हैं उनके लक्षण क्या हैं और परख क्या है? (हर एक ने सुनाया) आप सबने सुनाया वो यथार्थ है। मुख्य सार तो यही निकला कि जो परवाने होंगे वो एक तो शमा के स्नेही होंगे, समीप होंगे और सर्व सम्बन्ध, उस एक के साथ ही होंगे। तो सर्व सम्बन्ध, स्नेही, समीप और साहस। जो सम्पूर्ण परवाने होते हैं उनमें यह चारों ही बातें देखने में आती हैं। तो आप सबको यहाँ भट्टी में किसलिए बुलाया है? जो यह चार बातें सुनाई हैं वो चारों ही बातें अपने सम्पूर्ण परसेन्टेज में धारण करनी हैं। एक परसेन्ट भी कम न होना चाहिए। कई बच्चे कहते हम हैं तो सही लेकिन इतने परसेन्ट। तो जिनमें परसेन्ट की कमी हो गई तो उनको सम्पूर्ण परवाना नहीं कहेंगे। वो परवाना दूसरी क्वालिटी का कहा जायेगा, जो कि चक्र ही काटने वाले होते हैं। एक होते हैं शीघ्र एक ही बार शमा पर फिदा होने वाले, दूसरे होते हैं — सोच समझ कर कदम उठाने वाले। तो जो सोच समझ कर कदम उठाते रहेंगे उनको कहेंगे फेरी पहनने वाले। चक्र काटने वाले। तो दूसरी क्वालिटी वाले परवाने कई प्रकार के संकल्पों, विघ्नों और कर्मों में ही चक्र काटते रहते हैं। तो आज पाण्डव सेना को भट्टी में बुलाया है। कहीं पर भी कोई फैक्टरी होती है तो जो बढ़िया फैक्टरी होती है उसकी छाप लगती है। अगर उस फैक्टरी की छाप नहीं होती है तो वो चीज इतनी नहीं चलती है। इस रीति आप भी जो भट्टी में आये हो तो यहाँ भी छाप लगाने के लिए आये हो। ट्रेड मार्क होता है ना। आप फिर कौनसी छाप लगवाने लिए आये हो? सम्पूर्ण सरेन्डर या सम्पूर्ण समर्पण का छाप अगर नहीं लगा तो मालूम है कि क्या होगा? जैसे छाप न लगी चीज की वैल्यू कम होती जाती है। उसी रीति से आप आत्माओं की भी स्वर्ग में वैल्यू कम हो जायेगी। तो अपनी राजधानी में समीप आने लिए यह छाप लगाना ही पड़ेगा। माताओं को तो नष्टोमोहा का मन्त्र मिला। और पाण्डव सेना को सम्पूर्ण समर्पण का। पाण्डवों का ही गायन है कि गल कर खत्म हो गए। पहाड़ों पर नहीं लेकिन ऊँची स्थिति में गल कर अपने को निचाई से बिल्कुल ऊपर जो अव्यक्त स्थिति है, उसमें गल गये।

अर्थात् उस अव्यक्त स्थिति में सम्पूर्णता को प्राप्त हुए। यह पाण्डवों का यादगार भी है। उस यादगार की याद दिलाने और प्रैक्टिकल में लाने लिए भट्टी मिली है।

सम्पूर्ण समर्पण किसको कहा जाता है? जो सम्पूर्ण समर्पण अर्थात् तन-मन-धन और सम्बन्ध, समय सब में अर्पण। अगर मन को समर्पण कर दिया तो मन को बिना श्रीमत के यूज नहीं कर सकते। अब बताओ धन को श्रीमत से यूज करना तो सहज है तन को भी यूज करना सहज है। लेकिन मन सिवाय श्रीमत के एक भी संकल्प उत्पन्न नहीं करे — इस स्थिति को कहा जाता है समर्पण। इसलिए ही मनमनाभव का मुख्य मन्त्र है। अगर मन सम्पूर्ण समर्पण है तो तन-मन-धन-समय सम्बन्ध शीघ्र ही उस तरफ लग जाते हैं। तो मुख्य बात ही है मन को समर्पण करना अर्थात् व्यर्थ संकल्प, विकल्पों को समर्पण करना। वो ही परख है सम्पूर्ण परवाने की। सम्पूर्ण समर्पण वालों को मन में सिवाय उनके (बापदादा के) गुण, कर्तव्य और सम्बन्ध के कुछ और सूझता ही नहीं। अब बताओं कि ऐसा छापा लगाया हुआ है? जैसे आजकल के जमाने में आप लोग सब दफ्तरों में काम करते हो तो कभी-कभी दफ्तर की जो चीजें होती हैं, वो अपने काम में लगा देते हो। इसी रीति जो आपने समर्पण कर दिया तो वह आपकी चीज नहीं रही। जिसको दिया उनकी हुई, तो उनकी चीज को आप अपने कार्य में यूज नहीं कर सकते हो। लेकिन संस्कार होने के कारण कभी-कभी श्रीमत के साथ मनमत, देहअभिमानपने की मत, शूद्रपने की मत कहीं यूज कर लेते हो। इसलिए ही कर्मातीत अवस्था वा अव्यक्त स्थिति सदा एकरस नहीं रहती है। क्योंकि मन भिन्न-भिन्न रस में हैं तो स्थिति में भिन्न-भिन्न है। एक ही रस में रहे तो एक ही स्थिति रहे। बापदादा बच्चों को हल्का बनाते हैं और बच्चे जानबूझकर अपने पर बोझ ले लेते हैं। क्योंकि ६३ जन्मों से विकर्मों का बोझ, लोक मर्यादा का बोझ उठाने के आदि बन गये हैं। इसलिए बोझ उतार कर भी फिर रख लेते हैं। जिनकी जो आदत होती है वो आदत से मज़बूर हो जाते हैं ना। इसलिए अपनी आदतें होने कारण अपनी जिम्मेदारी फिर अपने पर ही रख देते हैं। एक-एक पाण्डव अगर सम्पूर्ण समर्पण बनकर ही निकले तो बताओ क्या होगा? जब पाण्डव तैयार हो जावेगी तो कौरव और यादव मैदान में आ जायेंगे और फिर क्या होगा? आपका राज्य आपको प्राप्त हो जायेगा। जब तक यह वायदा नहीं किया कि जो सोचेंगे, बालेंगे, जो सुनेंगे, जो करेंगे सो श्रीमत के बिना कुछ नहीं करेंगे। तब तक इस भट्टी से लाभ नहीं ले सकते हैं। ऐसा ही उमंग-उत्साह लेकर आये हो ना। कुछ बनकर ही निकलेंगे, बदलकर ही निकलेंगे। यह सोचकर आये हो ना? घबराहट तो नहीं होती है? जितना-जितना गहराई में जायेंगे उतना ही घबराहट गायब हो जायेगी। जब तक किसी भी बात की गहराई में नहीं जाते हैं तो घबराहट आती है। जैसे सागर के ऊपर-ऊपर की लहरों में घबराहट होती है लेकिन सागर के तले में, गहराई में क्या होता है? बिल्कुल शांत और शांत के साथ प्राप्ति भी होती है। इसलिए जो भी कोई घबराहट की बात आये तो गहराई में चले जाना तो घबराहट गायब हो जायेगी। अब लक्ष्य और लक्षण कौन से धारण करने हैं? इसमें जो नम्बरवन होंगे उनका क्या करेंगे? भविष्य में तो राजधानी लेंगे ही लेकिन यहाँ भी सौगात मिलेगी। इसलिए हर एक यही प्रयत्न करें कि हम तो नम्बर वन में आयेंगे, दो नम्बर वाले को नहीं मिलेगा। जो विन करेंगे वो वन नम्बर पायेंगे। विन करने की कोशिश करो तो वन जायेंगे।

अच्छा-आपको बिन्दी लगानी है वा बिन्दी रूप ही हो? टीके कितने प्रकार के होते हैं? आज आपको डबल टीका लगाते हैं। संगम पर निरोगी बनने का और भविष्य में राज-भाग का। बिन्दी रूप की स्मृति रखने के लिये बिन्दी लगाते हो। बिन्दी लगाते-लगाते बिन्दी बन जायेंगे। कोई भी व्यर्थ संकल्प आये तो उनको बिन्दी लगा दो तो बिन्दी बन जायेंगे।

### परखने की शक्ति को तीव्र बनाओ

16.10.69

आज विशेष क्या देख रहे हैं? परिवर्तन कैसे देखते हैं? इस ग्रुप में प्रश्न का उत्तर देने में होशियार कौन है? देखने और परखने की शक्ति कहाँ तक आई है? अच्छा — योग की स्थिति में निरन्तर रहने वाला कौन? दिव्यगुणों की धारणा में दिव्यगुण मूर्त कौन नज़र आता है? यह क्यों पूछते हैं? क्योंकि अगर परखने की प्रैक्टिस होगी तो जब दुनिया में कार्य अर्थ जाते हो और आसुरी सम्प्रदाय के साथ सम्बन्ध रखना पड़ता है तो परखने की प्रैक्टिस होने से बहुत बातों में विजयी बन सकते हो। अगर परखने की शक्ति नहीं तो विजयी नहीं बन सकते। यह तो थोड़ी सी रेख देख की कि अपने ही परिवार कि अन्दर कहाँ तक परख सकते हो। यूं तो हरेक रत्न एक दो से श्रेष्ठ है। लेकिन फिर भी परखने की प्रैक्टिस जरूर चाहिए। यह परखने की प्रैक्टिस छोटी बात नहीं समझना। इस पर ही नम्बर ले सकते हो। कोई भी परिस्थिति को, कोई भी संकल्प वाली आत्माओं को, वर्तमान और भविष्य दोनों कालों को भी परखने की प्रैक्टिस चाहिए। विशेष करके जो पाण्डव सेना हैं, उन्हीं को यह परखने की शक्ति बहुत आवश्यक है। क्योंकि आप गोपों को बहुत प्रकार की परिस्थितियां सामने आती है। उन्हीं का सामना करने लिये यह बुद्धि बहुत आवश्यक है। परखने की पावर कैसे आयेगी - उसके लिए मुख्य साधन कौनसा है? परखने की शक्ति को तीव्र बनाने लिए मुख्य कौन सा साधन है? परखने का तरीका कौन सा होना चाहिए? तुम्हारे सामने कोई भी आये उनको परख सकते हो? (हरेक ने अपना-अपना विचार बताया) सभी का रहस्य तो एक ही है। अव्यक्त स्थिति वा याद वा आत्मिक स्थिति बात तो वही है। लेकिन आत्मिक स्थिति के साथ-साथ यथार्थ रूप से वही परख सकता है जिनकी बुद्धि में ज्यादा व्यर्थ संकल्प नहीं चलते होंगे। उनकी बुद्धि एक के ही याद में, एक के ही कार्य में और एक रस स्थिति में होगी। वह दूसरे को जल्दी परख सकेंगे। जिनकी बुद्धि में ज्यादा संकल्प उत्पन्न होंगे तो उनकी बुद्धि दूसरों को परखने के लिए भी अपने व्यर्थ संकल्प की मिक्सचरिटी होगी। इसलिए जो जैसा है वैसा परख नहीं सकेंगे। तो मूल रहस्य निकला बुद्धि की सफाई। जितना बुद्धि की सफाई होगी उतना ही योग युक्त अवस्था में रह सकेंगे। यह व्यर्थ संकल्प और विकल्प जो चलते हैं वह अव्यक्त स्थिति होने में विघ्न हैं। बार-बार इस शरीर के आकर्षण में आ जाते हैं उसका मूल कारण है कि बुद्धि की सफाई नहीं है। बुद्धि की सफाई अर्थात् बुद्धि को जो महामन्त्र मिला हुआ है उसमें बुद्धि मगन रहे। एक की याद को छोड़ अनेक तरफ बुद्धि जाने के कारण शक्तिशाली नहीं रहते। वैसे भी जब बुद्धि बहुत कार्य तरफ लगी हुई होती है। तो अनुभव किया होगा बुद्धि में वीकनेस, थकावट महसूस होती है। और जो भी है यथार्थ रूप से निर्णय नहीं कर सकेंगे। इसी रीति व्यर्थ संकल्प, विकल्प जो चलते हैं, यह भी बुद्धि को थकावट में लाते हैं। थकी हुई कोई भी आत्मा न परख सकेगी न निर्णय कर सकेगी।

कितना भी होशियार होगा तो थकावट में उनके परखने, निर्णय करने में फर्क पड़ जाता है। सारा दिन इन संकल्पों से बुद्धि थकी हुई होने कारण निर्णय करने की शक्ति में कमी आ जाती है। इसलिए विजयी नहीं बन सकते। हार खाने का मुख्य कारण यह है। बुद्धि की सफाई नहीं है। जैसे उन्हों की हाथ की सफाई होती है ना। आप फिर बुद्धि की सफाई से क्या से क्या कर सकते हो। वह हाथ की सफाई से झट से बदल देते हैं। देरी नहीं लगती। इसलिए कहते हैं जादूगर। आप में भी बदलने का जादू आ जायेगा। अभी बदलने सीखे हो, लेकिन जादू के समान नहीं बदल सकते हो अर्थात् जल्दी नहीं बदल सकते हो। समय लगता है। जादू चलाने के लिये जितना समय जिसको मंत्र याद रहता है, उतना उसका जादू सफल होता है। आपको भी अगर महामंत्र याद होगा तो जादू के समान कार्य होगा। अब इसी में देरी है। तो अब इस भट्टी से क्या बनकर निकलेंगे? (जादूगर) अगर इतने जादूगर भारत के कोने-कोने में, छा जायेंगे तो क्या हो जावेगा? एक मास के अंदर कुछ और नज़ारा देखने में आयेगा? अब तो तैयारी करनी पड़ेगी ना। अगर इतने जादूगर बदलने का कार्य शुरू कर देंगे तो फिर क्या करना पड़ेगा? ऐसी कुछ नवीनता आप भी देखना चाहते हो और बाप-दादा भी चाहते हैं। ऐसा आवाज फैल जाये कि यह कौन कहाँ से प्रगट हुए हैं। ऐसे महसूस हो कि एक-एक स्थान पर कोई अलौकिक आत्मा अवतरित होकर आई है। एक अवतार इतना कुछ कर सकता है तो यह कितने अवतार हैं। यहाँ से जब जाओ तो ऐसे ही समझकर जाना कि हम इस शरीर में अवतरित हुए हैं — ईश्वरीय सेवा के लिये। अगर यह स्मृति रखकर जायेंगे तो आपके हर चलन में अलौकिकता देखने में आयेगी। जो भी आपके दैवी परिवार वाले वा लौकिक परिवार वाले हैं वह महसूस करें कि यह कुछ अनोखे ही बनकर आये हैं, बदलकर आये हैं। जब आप की बदलने की महसूसता आयेगी तब आप दुनिया को बदल सकेंगे। अगर आप सभी के बदलने की भासना नहीं तो दुनिया को नहीं बदल सकेंगे। खुद बदल कर दुनिया को बदलना है। ऐसे ही समझकर चलना कि निमित्त मात्र इस शरीर का लोन लेकर ईश्वरीय कार्य के लिए, थोड़े दिन के लिए अवतरित हुये हैं। कार्य समाप्त करके फिर चले जायेंगे। यह स्मृति, लक्ष्य रख करके, ऐसी स्थिति बनाकर फिर चलना। यह बगीचा है। बापदादा चैतन्य बगीचे में आते हैं। तो कुछ वाणी से खुशबू लेते हैं, कुछ नयनों से, कुछ मस्तक के मणी से। हरेक के मस्तिष्क के मणी की चमक बापदादा देखते हैं। ऐसे ही अगर आप सभी भी मस्तिष्क के मणी को ही देखते रहो तो फिर यह दृष्टि और वृत्ति शुद्ध सतोप्रधान बन जायेगी। दृष्टि जो चंचल होती है उसका मूल कारण यह है। मस्तिष्क के मणी को न देख शारीरिक रूप को देखते हो। रूप को न देखो लेकिन मस्तिष्क के मणी को देखो। जब रूप को देखते हो तो ऐसे ही समझो कि सांप को देख रहे हैं। सांप के मस्तिष्क में मणी होती है ना। तो मणी को देखना है न कि सांप को। अगर शरीर भान में देखते हो तो मानों सांप को देखते हो। सांप को देखा और सांप ने काटा। सांप तो अपना कार्य करेगा। सांप में विष भी होता है। कोई-कोई विशेष सांप होते हैं। जिनमें मणी होती है। आप गोपों को सांप को कैसे मारना है। क्या करेंगे? आप सांप को देखते हुए भी सांप को न देखो। मणी को ही देखो। मणी को देखने से सांप का जो विष है वह हल्का हो जायेगा। अगर शरीर रूपी सांप को देखा तो फिर उनको बन जायेंगे। उन समान बन जायेंगे। लेकिन मणी को देखेंगे तो बापदादा के माला के मणी बन

जायेंगे। या तो बनना है सांप के समान या तो बनना है माला की मणी। अगर मणी बनना है तो देखो भी मणी को। फिर जो यह कम्पलेन है वह बदल कर कम्पलीट हो जायेंगी। सिर्फ बुद्धि की परख से कहाँ कम्पलेन कहाँ कम्पलीट। रात-दिन का फर्क है। लेकिन सिन्धी भाषा में लिखेंगे तो सिर्फ दो बिन्दियों का फर्क है। यहाँ भी ऐसे हैं। दो बिन्दी एक स्वयं की, एक बापदादा की। यह दो बिन्दी ही याद रहें तो कम्पलेन की बजाय कम्पलीट हो जायें। इसलिए आज से यह प्रतिज्ञा अपने आप से करो। बापदादा के सामने तो बहुत प्रतिज्ञाएं की हैं लेकिन आज अपने आपसे प्रतिज्ञा करो कि अब से लेकर सिवाए मणी के और कुछ नहीं देखेंगे और खुद ही माला के मणी बन करके सारे सृष्टि के बीच चमकेंगे। जब खुद मणी बनेंगे तब चमकेंगे। अगर मणी नहीं बनेंगे तो चमक नहीं सकेंगे। जब प्रतिज्ञा करेंगे तब ही प्रत्यक्षता होगी। अपने आपसे पूर्ण रूप से प्रतिज्ञा नहीं कर पाते हो इसलिए प्रत्यक्षता भी पूर्ण रूप से नहीं हो पाती है। प्रत्यक्षता कम निकलने का कारण अपने आपसे प्रतिज्ञा की कमी है। अभी-अभी बोलते हो फिर अभी-अभी भूलते हो। लेकिन अब प्रतिज्ञा के साथ-साथ यह भी निश्चय करो कि प्रत्यक्षता भी लायेंगे तब आपकी प्रतिज्ञा प्रत्यक्षता कर दिखायेगी। पाण्डव सेना है ज्ञानी तू आत्मा और शक्ति सेना है स्नेही तू आत्मा। जो स्नेही है वह योगी है। अभी तो एक-एक पाण्डव के मस्तक में उमंग-उत्साह झलक रहा है। यह उमंग और उत्साह एकरस सदा रहे। मेहनत जो ली है उसका फल दिखाना है। अगर मेहनत ली हुई यहाँ चुक्त् नहीं करेंगे तो फिर सतयुग में वह मेहनत का फल देना पड़ेगा इसलिए जो मेहनत ली है उसे भरकर देना।

हरेक सेवाकेन्द्र से यह समाचार आना चाहिए यह कुमार तो अवतरित होकर के इस पृथ्वी पर पधारे हैं। ऐसा समाचार जब आये तब समझो कि फल निकल रहा है। अभी स्थिति की आवश्यकता है। जैसे बापदादा लोन लेकर आते हैं ना। अभी तो दोनों ही लोन लेते हैं। थोड़े समय के लिये आते हैं किस लिए? मिलने के लिये। वैसे ही आप सभी भी समझो कि हम लोन लेकर सर्विस के निमित्त आये हैं — थोड़े समय के लिये। जब ऐसी स्थिति होगी तब बाप का प्रभाव दुनिया के सामने आयेगा। दोनों ही हिसाब ठीक किया है। या लेने का किया है, देने का नहीं? ६ मास तक एकरस रहेंगे ना कि 15 दिन के बाद लिखेंगे चाहते तो हैं लेकिन क्या करें, यह हो गया...ऐसी कोई भी कम्पलेन नहीं आये। फिर तो दीदी का काम हल्का हो जायेगा। आप खुद भारी होंगे तो सारा कार्य भारी हो जायेगा। बापदादा की आशा कहें वा शुद्ध संकल्प कहें यही रहता है और रहेगा ही की एक-एक नम्बरवन हो। लेकिन सारे कल्प के अन्दर जो अब की स्थिति बनायेंगे वह तो अब के हिसाब से नम्बरवन है ना। जो वास्तविक सम्पूर्ण स्टेज है। इसके लिये कह रहे हैं। सभी यही लक्ष्य रखें कि हम नम्बरवन जायेंगे। यह नहीं सोचना कि सभी कैसे नम्बरवन जोयेंगे। इसमें महादानी नहीं बनना है। दो बातें मुख्य याद रखना है कि एक तो मणी को देखना, देह रूपी सांप को न देखना। और दूसरी बात अपने को अवतरित समझो। इस शरीर में अवतरित होकर कार्य करना है। और एक सलोगन सदा याद रखना कि जो बापदादा कहेंगे, जो करायेंगे, जैसे चलायेंगे, वैसे ही करेंगे, चलेंगे, बोलेंगे, देखेंगे। यह है पाण्डव सेना का मुख्य सलोगन। जो कहेंगे वे सोचेंगे और कुछ सोचना नहीं है। इन आंखों से और कुछ देखना नहीं है। आखें भी दे दी ना। पूरे परवाने हो ना। परवाने को शमा बिगर और कुछ देखने

में आता है क्या? आपकी आंखे और क्यों देखती? जब और कुछ देखते हैं तो धोखा देती हैं। अपने को धोखा न दो। इसके लिए परवानों को सिवाए शमा के और किसी को नहीं देखना है। सम्पूर्ण अर्थात् पूरा परवाना है। यह है छापा। रिजल्ट तो अच्छी है लेकिन उसको अविनाशी रखना है। जब जैसे चाहें वैसी स्थिति बना सकें। यह मन को ड्रिल करानी है। यह जरूर प्रैक्टिस करो। एक सेकेण्ड में आवाज में, एक सेकेण्ड में फिर आवाज से परे। एक सेकेण्ड में सर्विस के संकल्प में आयेँ और एक सेकेण्ड में संकल्प से परे स्वरूप में स्थित हो जायेँ। इस ड्रिल की बहुत आवश्यकता है। ऐसे नहीं कि शारीरिक भान से निकल ही न सकें। एक सेकेण्ड में कार्य प्रति शारीरिक भान में आयेँ फिर एक सेकेण्ड में अशारीरी हो जायेँ, जिसकी यह ड्रिल पक्की होगी वह सभी परिस्थितियों का सामना कर सकते हैं। जैसे शारीरिक ड्रिल सुबह को कराई जाती है वैसे यह अव्यक्त ड्रिल भी अमृतबेले विशेष रूप से करना है। करना तो सारा दिन है लेकिन विशेष प्रैक्टिस करने का समय अमृतबेले है। जब देखो बुद्धि बहुत बिजी है तो उसी समय यह प्रैक्टिस करो। परिस्थिति में होते हुए भी हम अपनी बुद्धि को न्यारा कर सकते हैं। लेकिन न्यारे तब हो सकेंगे जब जो भी कार्य करते हो वह न्यारी अवस्था में होकर करेंगे। अगर उस कार्य में अटैचमेंट होगी तो फिर एक सेकेण्ड में डिटैच नहीं होंगे। इसलिए यह प्रैक्टिस करो। कैसी भी परिस्थिति हो। क्योंकि फाइनल पेपर अनेक प्रकार के भयानक और न चाहते हुए भी अपने तरफ आकर्षित करने वाली परिस्थितियों के बीच होंगे। उनकी भेंट में जो आजकल की परिस्थितियां है वह कुछ नहीं हैं। जो अन्तिम परिस्थिति आने वाली है, उन परिस्थितियों के बीच पेपर होना है। इसकी तैयारी पहले से करनी है। इसलिए जब अपने को देखो कि बहुत बिजी हूँ, बुद्धि बहुत स्थूल कार्य में बिजी है, चारों ओर सरकमस्टान्सेज अपने तरफ खँचने वाली है तो ऐसे समय पर यह अभ्यास करो। तब मालूम पड़ेगा कहाँ तक हम ड्रिल कर सकते हैं। यह भी बात बहुत आवश्यक है। इसी ड्रिल में रहते रहेंगे तो सफलता को पायेंगे। एक-एक सबजेक्ट की नम्बर होती है। मुख्य तो यही है। इसमें अगर अच्छे हैं तो नम्बर आगे ले सकते हैं। अगर इस सबजेक्ट में नम्बर कम है तो फाइनल नम्बर आगे नहीं आ सकते। इसलिए सुनाया था कि ज्ञानी तू आत्मा के साथ में स्नेही भी बनना है। जो स्नेही होता है वह स्नेह पाता है। जिससे ज्यादा स्नेह होता है। तो कहते हैं यह तो सुध-बुध ही भूल जाते हैं। सुध-बुध का अर्थ ही है अपने स्वरूप की जो स्मृति रहती है वह भी भूल जाते हैं। बुद्धि की लगन भी उसके सिवाए कहाँ नहीं हो। ऐसे जो रहने वाले होते उनको कहा जाता है स्नेही।

इस ग्रुप का विशेष गुण यही है कि सभी बातों को सीखने और धारण करने और आगे के लिए भी अपने को उसमें चलाने के लिये चात्रक हैं। चात्रक बने हो लेकिन साथ में चरित्रवान भी बनना है। चात्रक हैं, यह इस ग्रुप की विशेषता है। लेकिन चात्रक का कार्य होता है उसके प्यासी रहना। यह चित्र चरित्र में देखें तब फिर चात्रकों के साथ में पात्र भी कहेंगे। अभी चात्रक तो हैं। फिर रिजल्ट आने बाद दो टाइल मिलेंगे, अभी चात्रक हैं। फिर विजय माला के नज़दीक आने के पात्र भी होंगे। जो सलोगन सुनाया और जो भट्टी की छाप सुनाई उनको कायम रखेंगे तो दोनों ही गुण आ जायेंगे। अच्छा-

## बिन्दू और सिन्धु की स्मृति से सम्पूर्णता

20.10.69

आज किस संगठन में बाप-दादा आए हैं? आज के संगठन को क्या कहेंगे? आज का संगठन है ज्ञान सूर्य और सितारों का। हरेक सितारा अपनी-अपनी चमक दिखाने वाला है। बाप-दादा हरेक सितारे की चमक देखने के लिये आये हैं। आप सभी इस भट्टी में आये हो तो अपने को क्या बनाने के लिये आये हो? मालूम है भट्टी से क्या बनकर निकलना है? (फरिश्ता) फरिश्ता नहीं हो? इस भट्टी में सम्पूर्णता का ठप्पा लगाकर निकलेंगे। अभी फरिश्ते बनने के पुरुषार्थी हो। लेकिन सम्पूर्णता में जो कमी है, उसी कमी को इस भट्टी में स्वाहा करने के लिये आये हो। ऐसे हो ना? कमियों को दूर करने के लिये क्या बात याद रखेंगे? जिससे सम्पूर्णता का पूरा ही छाप लगाकर जायेंगे? आज बाप-दादा बहुत सहज बात सुनाते हैं। बहुत सहज ते सहज यही बात याद रखना है कि मैं बिन्दु हूँ और बाप भी बिन्दु है, लेकिन बिन्दु के साथ-साथ सिन्धु है। तो बिन्दु और सिन्धु यह बाप और बच्चे का परिचय है। दो शब्द भी अगर याद रखो तो सम्पूर्णता सहज आ सकती है। स्कूल में छोटे बच्चों को जब पढ़ाते हैं तो पहले-पहले क्या सिखलाते हैं? पहले तो बिन्दु ही लिखेंगे। फिर आगे बढ़ते हैं तो एक वा अल्फ सिखलाते हैं। तो यह भी एक बिन्दु। फिर आगे बढ़ते हैं तो बिन्दु की याद एक, उस एक में ही सभी बातें आ जाती हैं। एक की याद और एकरस अवस्था एक की ही मत और एक के ही कर्तव्य में मददगार। अगर एक-एक बात ही याद रखें तो बहुत ही अपने को आगे बढ़ा सकते हैं। सिर्फ बिन्दु और एक, उसके आगे विस्तार में जाने की दरकार नहीं। विस्तार में जाना है तो सिर्फ सर्विस प्रति। अगर सर्विस नहीं तो बिन्दु और एक। उसके आगे अपनी बुद्धि को चलाने की इतनी आवश्यकता नहीं है। सिर्फ यही बातें याद रखो तो सहज सम्पूर्णता को पा सकते हो। सहज है वा मुश्किल है? सहज मार्ग है लेकिन सहज को मुश्किल कौन बनाता है। (संस्कार) यह संस्कार भी उत्पन्न क्यों होते हैं? सिर्फ अपनी विस्मृति इन सब बातों को उत्पन्न करती है। चाहे पिछले संस्कार चाहे, पिछले कर्म बन्धन चाहे, वर्तमान की भूलें जो भी कुछ होता है। उनका मूल कारण अपनी विस्मृति है। अपनी विस्मृति के कारण यह सभी व्यर्थ बातें सहज को मुश्किल बना देती हैं। स्मृति रहने से क्या होगा? जो लक्ष्य रख करके आये हो स्मृति सम्पूर्ण विस्मृति असम्पूर्ण। विस्मृति है तो बहुत ही विघ्न हैं। और स्मृति है तो सहज और सम्पूर्णता। जो बातें सुनाई अगर इस स्मृति को मज़बूत करते जाओ तो विस्मृति आपे ही भाग जायेगी। स्मृति को छोड़ेंगे ही नहीं तो विस्मृति कहाँ से आयेगी। सूर्यास्त हो जाता है तब अंधियारा हो जाता है। सूर्यास्त ही ना हो तो अंधियारा कैसे आवे? वैसे ही अगर स्मृति का सूर्य सदा कायम रखेंगे तो विस्मृति का अंधियारा आ नहीं सकता। यह अलौकिक ड्रिल जानते हो? वैसे भी अभी वह जो ड्रिल करते हैं, वह तन्दुरुस्त रहते हैं। तन्दुरुस्ती के साथ-साथ शक्तिशाली भी रहते हैं तो यह अलौकिक ड्रिल जो जितनी करता है उतना ही तन्दुरुस्त अर्थात् माया की व्याधि नहीं आती और शक्ति स्वरूप भी रहता है। जितना-जितना यह अलौकिक बुद्धि की ड्रिल करते रहेंगे उतना ही जो लक्ष्य है बनने का, वह बन पावेंगे। ड्रिल में जैसे ड्रिल मास्टर कहता है वैसे हाथ-पांव चलाते हैं ना। यहाँ भी अगर सभी को कहा जाये एक सेकेण्ड में साकारी से निराकारी बन जाओ तो बन सकेंगे? जैसे स्थूल शरीर

के हाथ-पांव झट डायरेक्शन प्रमाण-ड्रिल में चलाते रहते हैं, वैसे एक सेकेण्ड में साकारी से निराकारी बनने की प्रैक्टिस है? साकारी से निराकारी बनने में कितना समय लगता है? जबकि अपना ही असली स्वरूप है फिर भी सेकेण्ड में क्यों नहीं स्थित हो सकते?

अब तक कर्मबन्धन? क्या अब तक भी कर्मबन्धन की आवाज सुनते रहेंगे? जब यह पुराना शरीर छोड़ देंगे तब तक कर्मबन्धन सुनते रहेंगे।

इस क्लास में प्रश्न का उत्तर देने वाले कौन हैं? वह तो बहुत नाम सुनाये, फिर प्रश्न-उत्तर से पार जाने वाले कौन हैं? इस भट्टी में परखने की पावर आयेगी। हरेक को यही कोशिश करनी चाहिए कि हम सम्पूर्ण बनकर ही जायेंगे ऐसे अब हो सकता है? वा अंत में होगा (हो सकता है) तो बाकी अंत तक रहकर क्या करेंगे? (प्रजा बनायेंगे) स्वयं राजा, ताजधारी बन जायेंगे और दूसरों को प्रजा बनायेंगे। आप समान भी बनाना है। प्रजा भी बनानी है। नहीं तो प्रजा बिगर राज्य किस पर करेंगे? तो ऐसे समझे कि इतने सभी सितारे सम्पूर्ण बन करके ही जायेंगे। यही उमंग और निश्चय हरेक में होना आवश्यक है कि हम सम्पूर्ण बनें और सर्व को बनायेंगे। यही उमंग-उत्साह सदा कायम रहे तो अवश्य ही लक्ष्य की प्राप्ति हो जायेगी। और बाप-दादा को निश्चय है ऐसे सम्पूर्ण ही इस यज्ञ कुण्ड से निकलेंगे। कुण्ड का यादगार देखा है? यज्ञ तो जो भी स्थान है सभी यज्ञ ही हैं लेकिन फिर भी यज्ञ कुण्ड का महत्व होता है। वैसे भी देखा होगा गंगा और यमुना दोनों का महत्व है लेकिन फिर भी संगम का महत्व ज्यादा है। वहाँ नहाना श्रेष्ठ माना जाता है। गंगा-यमुना तो बहुत स्थानों पर होती है लेकिन फिर भी विशेष संगम पर नहाने क्यों जाते हैं? उनका विशेष महत्व क्या है? संगम के महत्व को अच्छी तरह से जानते हो ना। जैसे विशेष स्थानों का विशेष महत्व होता है, इसी प्रकार मधुवन की भट्टी का भी विशेष महत्व है। इस भट्टी से सम्पूर्णता की सौगात बाप द्वारा मिलती है। यह मिलन का अर्थात् संगम का विशेष सौभाग्य बच्चों को मिलता है, यह मिलन ही सम्पूर्णता की सौगात के रूप में है। इस मिलन का ही यह संगम यादगार है। तो यह मिलना ही सम्पूर्णता की सौगात है। भट्टी से सम्पूर्ण बनने का तो छाप वा ठप्पा लगाकर ही जायेंगे लेकिन उसके साथ-साथ इस भट्टी में हिसाब करना भी अच्छी रीति सीखना है। कहाँ-कहाँ हिसाब पूरा न करने के कारण जहाँ प्लस करना है वहाँ माइ-नस कर लेते हैं। जहाँ माइनस करना है वहाँ प्लस कर लेते हैं इसलिए स्थिति डगमग होती है। यह हिसाब भी पूरा सीखना है कि किस बात में जोड़ना है और किस बात में कट करना है? प्रवृत्ति में रहने के कारण जहाँ ना जोड़ना वहाँ भी जोड़ लेते हैं और जहाँ काटना ना हो वहाँ भी काट लेते हैं। यह छोटा सा हिसाब बड़ी समस्या का रूप हो जाता है इसलिए यह भी पूरा-पूरा सीखना है कि प्रवृत्ति में रहते हुए भी क्या तोड़ना है क्या जोड़ना है। और जोड़ना भी है तो कहाँ तक और किस रूप में? आपको भट्टी में बुलाया है तो उसका कार्य भी बतायेंगे ना। कौन-कौन सी पढ़ाई की सबजेक्ट में परिपक्व होना है? एक तो अलौकिक ईश्वरीय ड्रिल की सबजेक्ट और दूसरी यह हिसाब करना, दोनों ही बातें इस भट्टी में सीखनी हैं। अगर इन दोनों बातों में सम्पूर्ण बन गये तो बाकी क्या रहेगा। सम्पूर्ण तो बन कर ही निकलेंगे। खुद तो बन जायेंगे लेकिन औरों को बनाने का कार्य भी बाकी रहेगा। इसी निमित्त ही जाना है। सम्बन्ध के कारण नहीं जाना है। लेकिन सर्विस के निमित्त जाना है। जाना भी है तो सिर्फ सर्विस के निमित्त। जहाँ भी रहो लेकिन



अपने को ऐसा समझकर रहेंगे तो अवस्था न्यारी और प्यारी रहेगी। जैसे बाप-दादा सर्विस के निमित्त आते जाते हैं ना। तो आप सभी को भी सिर्फ सर्विस के अर्थ निमित्त जाना है और सर्विस की सफलता पाकर के फिर सम्मुख आना है।

अव्यक्त वतन से वर्तमान समय बाप-दादा हर बच्चे को कौन सा मंत्र देते हैं? गो सून कम सून सर्विस प्रति जाओ और साथी बन करके जल्दी आओ। फिर जाओ। जब यहाँ गो सून कम सून होंगे तब बुद्धि द्वारा भी जल्दी होंगे। बुद्धि की ड्रिल भी गो सून कम सून है ना। वह स्थिति तब होगी जब यह स्थूल मंत्र याद रखेंगे। इस मंत्र से उस मंत्र का सम्बन्ध है। तब तो बताया यज्ञ कुण्ड का महत्व है। यहाँ आपको सौगात के रूप में मिलती है वहाँ पुरुषार्थ रूप में। तो यज्ञ कुण्ड का विशेष महत्व हुआ ना। यहाँ वरदान वहाँ मेहनत। जब वरदान मिल सकता है तो मेहनत क्यों करते हैं। इस यज्ञ कुण्ड से भाषा बोलना भी सीखकर जाना है। ऐसा सैम्पल बनना है जो आपको देख दूसरे भी आकर्षित होकर यज्ञ कुण्ड में स्वाहा हो जायें।

बाप-दादा हरेक की तस्वीर से हरेक की तकदीर और तदबीर देखते हैं कहाँ तक अपनी तकदीर बनाते हैं। आप भी जब किसको देखते हो तो हरेक की तस्वीर से उनकी तदबीर, उनके पुरुषार्थ का जो विशेष गुण है, वही देखना है। हर एक के पुरुषार्थ में विशेष गुण जरूर होता है। उस गुण को देखना है। एक होता है गुण और गुण के साथ-साथ फिर होता है गुणा। शब्द कितना नज़दीक है लेकिन वह क्या, वह क्या। अगर गुण नहीं देखते हो तो गुणा लग जाता है। तो हरेक के गुण को देखना है तो गुणा जो लगता है वह खत्म हो जायेगा।

जो एक दो के स्नेही होते हैं। ऐसे स्नेही बच्चों से बाप-दादा का भी अति-स्नेह है, स्नेह ही समीप लाता है। जितना स्नेही उतना समीप तो एक दो में स्नेही हो? ऐसे स्नेही बच्चे ही समीप भी आ सकते हैं अब भी और भविष्य में भी। विशेष स्नेही हैं इसलिये आज विशेष डबल टीका लगा रहे हैं। लेकिन अनोखा, लौकिक रीति का टीका नहीं। डबल टीका कौन सा है? एक तो निराकारी दूसरा न्यारापन। यह डबल टीका हरेक के मस्तिष्क पर अविनाशी स्थित कराने के लिये अविनाशी रूप से ही लगा रहे हैं। यह अविनाशी टीका सदा कायम रहता है? तिलक को सुहाग की निशानी कहा जाता है इस तिलक को सदा कायम रखने की कोशिश करनी है। जितना-जितना परिपक्व रहेंगे उतना पद पा सकेंगे। हरेक यही सोचे कि हम ही नम्बर वन हैं। अगर हरेक नम्बर वन होंगे तो नम्बर टू कौन आयेंगे? बाप की क्लास में कभी भी नम्बर नहीं निकल सकते। टीचर भी नम्बर वन स्टूडेंट भी नम्बर वन। तो एक-एक नम्बर वन। तो ऐसी क्लास का तो मधुवन में चित्र होना चाहिये।

### माला का मणका बनने के लिए विजयी बनो

25.10.69

बाप-दादा जब बच्चों को देखते हैं तो मुख्य बात क्या देखते हैं? आज यही देखने आये हैं कि हरेक रत्न अपने में क्या-क्या परिवर्तन लाया है तो आज परिवर्तन देखने लिये आये हैं। हरेक ने यथाशक्ति परिवर्तन तो लाया ही है। लेकिन बाप-दादा कौन सा परिवर्तन देखने चाहते हैं? उसको भी जानते हो ना। बाप-दादा परिवर्तन के साथ परिपक्वता भी देखने चाहते हैं। परिवर्तन तो देखा लेकिन परिवर्तन के साथ अपने में परिपक्वता भी लाई? बाप को अविनाशी सत्य बोलते हो ना।

तो ऐसे ही बाप के साथ अविनाशी परिवर्तन लाया है? जो खजाना मिलता है वह भी अविनाशी है, जो प्रालम्ब मिलती है, वह भी अविनाशी है। तो परिवर्तन भी अविनाशी लाया है वा सोचते हो कि जाने के बाद मालूम पड़ेगा। न मालूम कौन सी परिस्थितियां आयें, न मालूम परिपक्व रह सकें वा नहीं, वायदा तो करके जाते हैं लेकिन कहाँ तक निभा सकते हैं, वह देखेंगे। एक तो यह सोचते हैं। फिर दूसरे हैं निश्चय बुद्धि जिन्हों का बाप के साथ अपने में भी पूरा निश्चय है कि जो परिवर्तन लाया है वह सदा कायम रखेंगे। और जो वायदा करके जाते हो वह करके दिखायेंगे। वह हैं सम्पूर्ण निश्चयबुद्धि और कोई तो बिचारे हिम्मत धारण करने की कोशिश करते हैं, लेकिन अब तक अगर ऐसे ही करते चलेंगे तो अन्त तक भी क्या कोशिश करते रहेंगे? ऐसे पुरुषार्थी को झाटकू कहेंगे? देवियों पर बलि चढ़ते हैं तो शक्तियां वा देवियां ही बिगर झाटकू स्वीकार नहीं करती हैं तो क्या बाप-दादा ऐसे को स्वीकार कर सकता है। अगर यहाँ स्वीकार न किया तो स्वर्ग में ऊंच पद की स्वीकृति नहीं मिलेगी। इसलिये सुनाया था कि जो सोचना है वही कहना है, जो कहना है वही करना है। सोचना, कहना, करना तीनों ही एक होना चाहिये। लेकिन वर्तमान समय कई ऐसे बच्चे हैं जो सोचते बहुत हैं, कहते भी बहुत हैं लेकिन करने के समय कम रह जाते हैं। इसलिये कहा था इस भट्टी में पक्का कर जाना अर्थात् पक्का वायदा करके जाना है। पहले तो वायदा करने लिये हिम्मत है कि हिम्मत धारण करेंगे? जो हिम्मतवान बच्चे हैं उनकी निशानी क्या है? वह कभी हार नहीं खाते। अगर आप सभी हिम्मतवान हैं तो जरूर आज से कभी हारेंगे नहीं। बहुत समय से जो विजयी बनते हैं वही विजय माला के मणके बनते हैं। अगर विजय माला में पिरोने चाहते हैं तो विजयी बनने का परिवर्तन लाना पड़ेगा। परिवर्तन में मुख्य-मुख्य बातें चेक करनी हैं। बहुत सहज है।

दो शब्द याद रखना है। एक तो आकर्षण मूर्ति बनना है और दूसरा हर्षित मुख। आकर्षण करने वाला है रूह। रूहानी स्थिति में ही एक दो को आकर्षण कर सकेंगे। अगर यह दोनों बातें अपने में धारण कर ली तो सम्पूर्ण विजयी हैं ही। मैजारटी बच्चों में मुख्य कौन-सी बात है वह भी आज सुना रहे हैं। निश्चय बुद्धि तो हो तब तो यहाँ आये हो। बाप में निश्चय है, ज्ञान में भी निश्चय है लेकिन अपने में निश्चय कहाँ-कहाँ डगमगा देता है। मुख्य कमी यह है जो कंट्रोलिंग पावर नहीं है। यह न होने कारण समझते हुए, सोचते हुए, अपने को महसूस करते हुए भी फिर वही बात कर लेते हैं। इसका कारण कि कंट्रोलिंग पावर की आवश्यकता है। मन्सा में, वाचा में और कर्मणा में भी और साथ-साथ लौकिक सम्बन्धियों अथवा दैवी परिवार के सम्बन्ध में आने में भी। कहाँ तक क्या करना है, क्या कहना है। क्या नहीं कहना है। और जो नहीं करना है उसको कंट्रोल करना — यह पूरी पावर न होने कारण सफल नहीं होते हो। तो कंट्रोलिंग पावर की कमी कैसे मिटावेंगे? कई बार आप गोपों ने देखा होगा कोई भी चीज को कहाँ बहुत जोर से कंट्रोल करना होता है तो कंट्रोल करने लिये भी कई चीजों को हल्का छोड़ना पड़ता है। पतंग कब उड़ाया है? पतंग को कंट्रोल करने और ऊंचा उड़ाने लिये क्या किया जाता है? यह भी ऐसे हैं। अपनी बुद्धि को कंट्रोल करने के लिये कई बातों को हल्का करना पड़ता है। सभी से हल्की क्या चीज होती है? आत्मा (बिन्दी)। तो जब अपने को कंट्रोल करना हो तो अपने को बिल्कुल हल्का बिन्दु रूप में स्थित करना है। कंट्रोल करने लिये फुलस्टाप करना होता है। तो आप भी बिन्दी

लगा दो। जो बीत चुका उसको बिल्कुल भूल जाओ। देखा, किया लेकिन फिर एकदम उसको समाप्त कर दो। समाप्त करना अर्थात् बिन्दी, फूलस्टाप करना। कामा (,) लगाने आती है, या क्वेशन (?) करने भी आता है। अजब की निशानी! भी लगाने आती है, लेकिन फुल स्टाप लगाना नहीं आता है। कागज पर निशानियां लगाना तो सहज है लेकिन अपने कर्मों के ऊपर यह निशानियां लगाना इसमें मुश्किल क्यों? कागज पर निशानियां लगाते हो ना। और जो निशानी जहाँ लगानी है वहाँ ही लगती है इसको कहा जाता है प्रवीण। अगर कोमा के बदली कोई फुल-स्टाप लिख दे तो प्रवीण नहीं कहा जायेगा। जहाँ क्वेश्चन करना है वहाँ क्वेश्चन न करें तो भी प्रवीण नहीं कहेंगे। यहाँ भी क्वेश्चन किस बात में, अजब किस बात में, फुलस्टाप किस बात में देना है, यह पूरी पहचान न होने कारण प्रवीण नहीं बनते हैं। अब समझा। कंट्रोल क्यों नहीं कर पाते क्योंकि उस समय ज्ञान का पैट्रोल कम हो जाता है। अगर ज्ञान का पैट्रोल है तो कंट्रोल है। इसलिये अपने बुद्धि रूपी टंकी में पैट्रोल को जमा रखो। माइनस और प्लस का हिसाब सीखे हो? और बैलन्स निकालना भी सीखे हो? ऐसे तो नहीं सिर्फ जोड़ किया, कट किया लेकिन जमा करना भी सीखो। अगर जमा नहीं होगा तो न औरों को दे सकेंगे न अपने को आगे बढ़ा सकेंगे। जमा किया जाता है दूसरों को देने के लिये, अपनी आवश्यकता के समय काम में लाने के लिये। तो यह भी देखना है कितना जमा किया है? सिर्फ कमाना और खाना है वा जमा भी होता है? कब हिसाब किया है? 25 प्रतिशत जमा तो बहुत कम है। अगर 25 प्रतिशत जमा किया है तो अभी के हिसाब से बाप-दादा भी कौन सी जिम्मेवारी देंगे? यहाँ से जास्ती याद कितने दिनों में करेंगे? तीव्र पुरुषार्थी कभी विनाश की डेट का नहीं सोचते। बहुत समय से अगर सम्पूर्णता के संस्कार होंगे तो अन्त में भी सम्पूर्ण हो सकेंगे। अगर अंत में बनेंगे तो फिर बाप दादा भी अंत में थोड़ा दे देंगे। जो अभी करते हैं उनको बाप-दादा भी सतयुग के आरंभ में कहते—आओ। बाप-दादा तो हरेक रत्न में उम्मीद रखते हैं कि यह अनेकों को उम्मीदवार बना-येंगे। जो अनेकों के उम्मीदवार हैं वह अपने लिये फिर अंत की उम्मीद कैसे रख सकते हैं। अच्छा। इस ग्रुप की भट्टी भी समाप्त हुई। समाप्त हुई वा आरंभ हुई? इस ग्रुप का एग्जामिन (परीक्षा) नहीं लिया है। जो एग्जाम्पल देखा उसको सदा काल के लिये कायम रखते आयेंगे तो फिर इम्तिहान लेंगे। कोई भी चीज़ को मज़बूत करना होता है तो क्या किया जाता है? फाउन्डे-शन मजबूत रखने के लिये घेराव की आवश्यकता होती है। जितना-जितना घेराव में जायेंगे इतना मजबूती होगी। ऊपर-ऊपर से नींव लगाने से मजबूती नहीं होती। जितना गहराई से ज्ञान को धारण किया होगा, उतना ही अपनी मजबूती लाई होगी। परिवर्तन तो सभी ने कुछ न कुछ लाया ही है, लेकिन कुछ न कुछ क्यों कहते हैं। क्योंकि फाइनल सर्टिफिकेट प्रैक्टिकल लाने के बाद देंगे। अभी सर्टिफिकेट नहीं देंगे। अभी हर्षित होते हैं कि हरेक बच्चा उमंग उत्साह से अपने पुरुषार्थ को आगे बढ़ाने में बहुत तत्पर है। लेकिन सर्टिफिकेट तब मिलेगा जब प्रैक्टिकल में रिजल्ट आउट होगी। ऐसे नहीं समझना कि भट्टी समाप्त हुई, लेकिन आरंभ हुई है। अभी सुनना हुआ, फिर करना है। करने के बाद सर्टिफिकेट मिलेगा।

इस ग्रुप की मुख्य खूबी यह देखी कि एकता है। लेकिन एकता के साथ-साथ अब दूसरा शब्द भी एड करना है। एकता के साथ एकांतप्रिय बनना है। जैसे एकता में नम्बरवन हैं वैसे एकान्त में

भी नम्बर वन आना है। यह धारण कर लो तो यह ग्रुप बहुतों से आगे जा सकता है। एकता के साथ एकान्तवासी कैसे बनें यह भी अपने में भरना है। एकान्तप्रिय वह होगा जिनका अनेक तरफ से बुद्धि योग टूटा हुआ होगा और एक का ही प्रिय होगा। एक प्रिय होने कारण एक ही की याद में रह सकता। अनेक के प्रिय होने के कारण एक ही याद में रह नहीं सकता, अनेक तरफ से बुद्धियोग टूटा हुआ हो। एक तरफ जुटा हुआ हो अर्थात् एक के सिवाय दूसरा न कोई — ऐसी स्थिति वाला जो होगा वह एकान्त प्रिय हो सकता है। नहीं तो एकान्त में बैठने का प्रयत्न करते हुए भी अनेक तरफ बुद्धि भटकेगी। एकान्त का आनंद अनुभव कर नहीं सकेंगे। सर्व सम्बन्ध, सर्व रसनाएं एक से लेने वाला ही एकान्त-प्रिय हो सकता है। जब एक द्वारा सर्व रसनाएं प्राप्त हो सकती हैं। तो अनेक तरफ जाने की आवश्यकता ही क्या? लेकिन जो एक द्वारा सर्व रसनाओं को लेने के अभ्यासी नहीं होते वह अनेक तरफ रस लेने की कोशिश करते। तो फिर एक भी प्राप्ति नहीं होती। और एक बाप के साथ लगाने से अनेक प्राप्तियां होती हैं। सिर्फ एक शब्द भी याद रखो तो उसमें सारा ज्ञान आ जाता, स्मृति भी आ जाती, सम्बन्ध भी आ जाता, स्थिति भी आ जाती। और साथ-साथ जो प्राप्ति होती है वह भी उस एक शब्द से स्पष्ट हो जाती। एक की याद, स्थिति एकरस और ज्ञान भी सारा एक की याद का ही मिलता है। प्राप्ति भी जो होती है वह भी एकरस रहती है। आज बहुत खुशी कल गुम हो जाती इसमें प्राप्ति नहीं होती। जो अतीन्द्रिय सुख मिलता है वह भी एकरस नहीं रहता। कभी बहुत तो कभी कम। अब तो एकरस अवस्था में स्थित होने का पेपर देने लिये जा रहे हो। देखेंगे पेपर में कितने मार्क्स लेते हैं। हमेशा यह कोशिश करो कि हम औरों को कर के दिखायें। हमारे कर्म और हमारी चलन औरों की पढ़ाई कराये। कोई भी बात में फेल न हो इसके लिये सहज बात सुना रहे हैं। तो कोई भी बात में फेल न हो इसके लिये एक बात याद रखना फालो फादर। साकार रूप में जो कर के दिखाया वह फालो करो तो कोई भी बात में फेल नहीं हो सकते। कहाँ भी जब फेल होने की बात सामने आये तो यही याद रखना कि फालो फादर कर रहा हूँ? जो इतने वर्ष साकार रूप में कर्म किये, वह एक शब्द भी सामने आ जाता है। तो जब फालोफादर करेंगे तो जो भी कोई ऐसे कार्य होंगे तो वह करने में ब्रेक आ जायेगी, जज करेंगे यह कर्म हम कर सकते हैं। फालो फादर। फादर कहने में दोनों ही आ जाते हैं। फालो फादर याद आने से फेल नहीं होंगे। फलोलेस बन जायेंगे। बाप-दादा बच्चों को फलोलेस बनाना चाहते हैं। माला में नजदीक लाने लिये यह सहज युक्ति बता रहे हैं। देखना आप को सुनाई युक्ति आप से पहले और काई प्रयोग न कर ले। बापदादा तो हरेक सितारे में उम्मीद रखते हैं। इसलिए कहते हैं उम्मीदवार सितारे।

विशेष स्नेह है तब तो ऐसे समय भी आये हैं। त्याग भी किया है ना। अपनी नींद का त्याग किया है तो यह भी स्नेह दिखाया। बापदादा अभी स्नेह का रिटर्न देते हैं। अभी जाने के बाद रिजल्ट देखेंगे। जाते हो आने के लिये। जाना और आना। जाना तो है ही। लेकिन जाना है आने के लिये। जितना-जितना अव्यक्त स्थिति के अनुभवी होते जायेंगे उतना ही अव्यक्त मधुबन में आकर्षित हो आयेंगे। अब व्यक्त मधुबन नहीं है। अच्छा।

## भविष्य को जानने की युक्तिया

9.11.69

### “दीपावली के शुभ दिवस पर—प्राणप्रिय अव्यक्त बापदादा के मधुर महावाक्य”

बापदादा एक-एक दीपक को एक काल (समय) की दृष्टि से देख रहे हैं या तीनों कालों की? बाप तो त्रिकालदर्शी हैं वा दादा भी त्रिकालदर्शी हैं? आप भी त्रिकालदर्शी हो या बन रहे हो? अगर त्रिकालदर्शी हो तो अपने भविष्य को देखते वा जानते हो? जानते हो मैं क्या बनूंगा? पाण्डव सेना में अपना भविष्य जानते हो या स्पष्ट है कि क्या बनोगे। और कौनसी राजधानी में? लक्ष्मी-नारायण भी किस नम्बर में? (हरेक ने अपना विचार बताया) जैसे आप आगे बढ़ते जायेंगे वैसे अपना भविष्य नाम-रूप-देश-काल यह चारों ही स्पष्ट होते जायेंगे कि किस देश में राज्य करना है किस नाम से, किस रूप से और किस समय, पहले राजधानी में भी क्या बनेंगे। दूसरी राजधानी में क्या बनेंगे! यह पूरी जन्मपत्री एक-एक को अपने अन्दर स्पष्ट होगी। बापदादा जब भी किसी को देखते हैं तो तीनों कालों को देखते हैं। पहले क्या था अब क्या है फिर भविष्य में क्या बनने वाले हैं। तो एक-एक दीप में यह तीनों काल देखते हैं। आप दो काल तो स्पष्ट जानते हो। पहले क्या थे और अब क्या हैं लेकिन भविष्य में क्या होना है, उसको जितना-जितना योग-युक्त होंगे उतना भविष्य भी स्पष्ट जान जायेंगे। जैसे वर्तमान स्पष्ट है। वर्तमान में कभी भी संकल्प नहीं उठता है कि है या नहीं है। ना मालूम क्या है यह कभी संकल्प नहीं उठेगा। इसी रीति से भविष्य भी स्पष्ट होगा। ऐसा स्पष्ट नशा हर एक की बुद्धि में नम्बरवार आता जायेगा। जैसे साकार रूप में मां-बाप दोनों को अपना भविष्य स्पष्ट था। नाम भी, रूप भी स्पष्ट, देश भी स्पष्ट और काल भी स्पष्ट था। इतना स्पष्ट है कि किस सम्बन्ध में आयेंगे? वा सम्बन्ध भी स्पष्ट किस रूप में सामने आयेगा। अभी दिल में थोड़ा बहुत किस-किस को आ सकता है। लेकिन कुछ समय बाद ऐसे ही निश्चय बुद्धि होकर कहेंगे कि यह होना ही है। अभी अगर आप कहेंगे भी तो दूसरे निश्चय करें या न करें। लेकिन थोड़े समय में आपकी चलन, आपकी तदबीर जो है वह आपके भविष्य तस्वीर को प्रसिद्ध करेगी। अब तदबीर और भविष्य में कुछ फर्क है। लेकिन जैसे-जैसे समय और आपका पुरुषार्थ समान होता जायेगा तो फिर कोई को संकल्प नहीं उठेगा। आप सभी ने दीपमाला मनाई। दीपमाला पर क्या करते हैं? एक दीप से अनेक दीप जगाते हैं तो अनेकों का एक के साथ लगन लगता है, यही दीपमाला है। अगर एक-एक दीपक की एक दीपक के साथ लगन है तो यही दीपमाला है। दीपक में क्या है? अग्नि। तो लगन होगी तो अग्नि भी होगी। लगन नहीं तो अग्नि भी नहीं। यही देखना है कि हम दीपक लगन लगाकर अग्नि बने हैं? दीपक कितने प्रकार के होते हैं? जो दुनिया में भी प्रसिद्ध हैं? (हरेक ने अपना-अपना विचार सुनाया) एक है अंधियारे को मिटाकर रोशनी करने वाला मिट्टी का स्थूल दीपक और दूसरा है आत्मा का दीपक, तीसरा है कुल का दीपक और चौथा कौन सा है? आशाओं का दीपक कहते हैं ना। बाप को बच्चों में आशा रहती है। तो चौथा है आशाओं का दीपक। यह चार प्रकार के दीपक गाये जाते हैं। अब इन चार दीपकों से हरेक ने कितने दीपक जगाये हैं? बापदादा की आशायें जो बच्चों में रहती है — वह दीपक जगाया है? मिट्टी के दीपक तो कई जन्म जगाये हैं। आत्मा का दीपक जगा है? यह चारों प्रकार के दीपक जब जग जाते हैं तब

समझो दीपमाला मनाई। ऐसा कोई कर्म न हो जो कुल का दीपक बुझ जाये। ऐसी कोई चलन न हो जो बापदादा बच्चों में आशाओं का दीपक जगाते वह बुझ जाये। एकरस और अटल-अडोल यह सभी दीपक जग रहे हैं? जिसका दीपक खुद जगा हुआ होगा वह औरों का दीपक जगाने बिगर रह नहीं सकता। बापदादा की बच्चों में मुख्य आशायें कौन सी रहती हैं? बापदादा की हर एक बच्चे में यही आशा रहती है कि एक-एक बच्चा पहले नम्बर में जायें अर्थात् हरेक विजयी रत्न बनें। विजयी रत्न की निशानियां क्या होंगी? जो आप सभी ने सुनाया वह तो जो सुना है वही बोला। इसलिए ठीक ही है। जो विजयी होगा उनके लक्षण तो आप सभी ने सुनाये लेकिन साथ-साथ विजयी उनको कहा जाता है — जो खुद तो विजय प्राप्त किया हुआ हो लेकिन औरों को भी अपने से आगे विजयी बनाये। जैसे बापदादा बच्चों को अपने से भी आगे रखते थे ना! वैसे ही जो विजयी रत्न होंगे उनकी विजय की निशानी यह है कि वह अपने संग का रंग सभी को लगायेंगे। जो भी सामने आये वह विजयी बनकर ही निकले। ऐसे विजयी रत्न विजय माला के किस नम्बर में आते हैं? खुद तो विजयी बने हो लेकिन और भी आपके संग के रंग से विजयी बन जायें। यही सर्विस रही हुई है। ऐसे नहीं कि कोटों में कोई ही विजयी बनेंगे। लेकिन जो जैसा होता है वैसा ही बनाता है। ऐसे विजयी रत्न जो अनेकों को विजयी बना सकें वही माला के मुख्य मणके हैं। तो विजयी की निशानी है आप समान विजयी बनाना। अभी यह सर्विस रही हुई है। अनेकों को विजयी बनाना है सिर्फ खुद को नहीं बनाना है। दीपमाला में पूरी दीपमाला जगी हुई होती है। जब दीपमाला कहा जाता है तो अनेक जगे हुए दीपकों की माला हरेक ने गले में डाली है? ऐसे जगे हुए दीपकों की माला हरेक रत्न और गले में जब डालेंगे तब विजय का नगाड़ा बजेगा। जैसे दिव्य गुणों की माला अपने में डाली है वैसे अनेक जगे हुए दीपकों की माला अपने गले में डालना है। जितनी यहाँ दीपकों की माला अपने गले में डालोगे उतनी वहाँ प्रजा बनेगी। कोई-कोई माला बहुत लम्बी-चौड़ी होती है। कोई सिर्फ गले में पहनने तक होती है। तो माला कौन सी पहननी है? बहुत बड़ी। ऐसी माला से अपने आपको श्रृंगार करना है। कितने दीपकों की माला अब तक डाली है? गिनती कर सकते हो वा अनगिनत हैं? दीपक भी अच्छे वह लगते हैं जो तेज जगे हुए होते हैं। टिम-टिम करने वाले अच्छे नहीं लगते। अच्छा।

मधुबन के फूलों में विशेषतायें क्या होनी चाहिए? नाम ही है मधुबन। तो पहली विशेषता है मधुरता। मधुरता ऐसी चीज है जो कोई को भी हर्षित कर सकते हैं। मधुरता को धारण करने वाला यहाँ भी महान् बनता है, और वहाँ भी मर्तबा पाता है। मधुरता वालों को सभी महान रूप से देखते हैं। तो यह मधुरता का विशेष गुण होना चाहिए। मधुरता से ही मधुसूदन का नाम बाला करेंगे। यह मधुबन नाम है। मधु अर्थात् मधुरता और बन में क्या विशेषता होती है? बन में वैराग्य वृत्ति वाले जाते हैं। तो बेहद की वैराग्य बुद्धि भी चाहिए। फिर इससे सारी बातें आ जायेंगी। और आप सभी को कॉपी करने के लिए यहाँ आयेंगे। सभी साचेंगे यह कैसे ऐसे बने हैं। सभी के मुख से निकलेगा कि मधुबन तो मधुबन ही है। तो यह दो विशेषतायें धारण करनी हैं — मधुरता और बेहद की वैराग्य वृत्ति। दूसरे शब्दों में कहते हैं स्नेह और शक्ति। आप सभी का सभी से जास्ती स्नेह है ना! बापदादा से। और बापदादा का मधुबन वालों से विशेष स्नेह रहता

है। क्योंकि भल कैसे भी हैं लेकिन सर्वस्व त्यागी हैं। इसलिए आकर्षित करते हैं। लेकिन सर्वस्व त्यागी के साथ अब स्नेह और शक्ति भी भरनी है। समझा-किस विशेषता को भरना है।

कुमारियों को कमाल कर दिखानी है। कुमारियों का हर कर्तव्य कमाल योग्य होना चाहिए। संकल्प और वाणी तथा कर्म कमाल का होना चाहिए। कुमारियां पवित्र होने के कारण अपनी धारणा को तेज बना सकती है। ऐसे कमाल का कर्तव्य कर दिखाना है, जो हर एक के मुख से यही निकले कि इन्हीं का कर्तव्य कमाल का है। जैसे बापदादा के हर बोल सुनते हैं तो मुख से निकलता है ना कि आज की मुरली तो कमाल की है। तो कुमारियों के हर कर्म ऐसे कमाल के होने चाहिए। बापदादा को फालो करना है। ऐसे नहीं कहना कि कोशिश करेंगे। जब तक कोशिश करेंगे तब तक कशिश नहीं होगी। अगर कशिश धारण करनी है तो कोशिश शब्द को खत्म कर दो। अभी कशिश रूप बनना है। फालो फादर करना है। बापदादा कभी कहते थे कि कोशिश करेंगे। फिर आप क्यों कहती हो कि कोशिश करेंगी। कुमारियां कमाल करेंगी तो साथी साथ भी देगा। नहीं तो साथी साक्षी हो जायेगा। इसलिए साथी को साथ रखना है। नहीं तो साक्षी बन जायेंगे। साक्षी अच्छा लगता है या साथी? जो मेहनत करते हैं उसका फल भी यहाँ ही मिलता है। यह स्नेह और भविष्य पद मिलता है। सभी का स्नेही बनने के लिए मेहनत करनी है। जो जितनी मेहनत करते हैं वह उतने ही स्नेही बनते हैं। समय पर स्नेही की ही याद आती है। कोई बात में मेहनत की याद आती है। बाबा भी क्यों याद आते हैं? मेहनत की है तब स्नेह है। मेहनत से स्नेही बनना है। जितना जास्ती मेहनत उतना सर्व के स्नेही बनेंगे। मेहनत का फल ही स्नेह है। जो मेहनत करते हैं उनको हरेक स्नेही की नजर से देखेंगे। जो मेहनत नहीं करेंगे उनको स्नेह की नजर से नहीं देखेंगे। स्टूडेंट को टीचर के गुण जरूर धारण करने हैं। स्नेह ही सम्पूर्ण बनाता है। स्नेह के साथ फिर शक्ति भी चाहिए। दोनों का जब मिलन हो जाता है तो स्नेह और शक्ति वाली अवस्था अति न्यारी और अति प्यारी होती है। जिसके लिए स्नेह है उसके समान बनना है। यही स्नेह का सबूत है। इसमें अपने को चेक करना है—कहाँ तक हम समानता में समीप आये हैं? जितना-जितना समानता में समीप होंगे उतना ही समझो कर्मातीत अवस्था के समीप पहुंचेंगे। यही समानता का मीटर है। अपनी कर्मातीत अवस्था परखना है। सिर्फ स्नेह रखने से भी सम्पूर्ण नहीं बनेंगे। स्नेह के साथ-साथ शक्ति भी होगी तो खुद सम्पूर्ण बन औरों को भी सम्पूर्ण बनायेंगे। क्योंकि शक्ति से वह संस्कार भर जाते हैं। तो अब स्नेह के साथ शक्ति भी भरनी है।

सभी के दिलों पर विजय किन गुणों से प्राप्त कर सकते हो? सभी को सन्तुष्ट करना। बाप में यह विशेष गुण था। वही फालो करना है। सभी मधुबन की लिस्ट में हो या आलराउन्डर की लिस्ट में हो? एक है हद की लिस्ट, दूसरी है बेहद की लिस्ट। आलराउन्डर और एवररेडी। इसी लिस्ट में मालूम है क्या करना होता है? एक सेकेण्ड में तैयार। संकल्पों को भी एक सेकेण्ड में बन्द करना है। मिलिट्री वालों का हर समय बिस्तरा तैयार रहता है। यह संकल्पों का बिस्तरा भी बन्द करना है। बिस्तरा भी एवररेडी रहना चाहिए। एवररेडी बनने वालों का संकल्पों का बिस्तरा तैयार रहना चाहिए। कोई भी परिस्थिति हो उसका सामना करने के लिए पेटी बिस्तरा तैयार हो। अच्छा।

रूहानी बच्चो! तुम आत्माओं को वाणी से परे अपने घर जाने के लिए पुरुषार्थ करना है। इस-

लिए इस पुरानी दुनिया में रहते देह और देह के सम्बन्धों से उपराम-चित होना है। पतित दुनिया में रहते हुए बाप पवित्र बनने की शक्ति देते हैं। पुरुषार्थ करके तुमको सदा पवित्र बनना है। बच्चे! सदैव गुणग्राहक बनना है। स्तुति-निन्दा, लाभ-हानि, जय-पराजय सभी में सन्तुष्ट होकर चलना है और रहमदिल बनना है। अच्छा।

### बापदादा की उम्मीदें

13.11.69

अशरीरी होकर फिर शरीर में आने का अभ्यास पक्का होता जाता है। जैसे बापदादा अशरीरी से शरीर में आते हैं वैसे ही तुम सभी बच्चों को भी अशरीरी होकर के शरीर में आना है। अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर फिर व्यक्त में आना है। ऐसा अभ्यास दिन-प्रतिदिन बढ़ाते चलते हो? बापदादा जब आते हैं तो किससे मिलने आते हैं? (आत्माओं से) आत्माएं कौन सी? जो सारे विश्व में श्रेष्ठ आत्माएं हैं। उन श्रेष्ठ आत्माओं से बापदादा का मिलन होता है। इतना नशा रहता है—हम ही सारे विश्व में श्रेष्ठ आत्मायें हैं। श्रेष्ठ आत्माओं को ही सर्वशक्तिमान के मिलन का सौभाग्य प्राप्त होता है। तो बापदादा भृकुटी के बीच में चमकते हुए सितारे को ही देखते हैं। तुम सितारों को किस-किस नाम से बुलाया जाता है? एक तो लक्की सितारे भी हो और नयनों के सितारे भी और कौनसे सितारे हो? जो कार्य अब बच्चों का रहा हुआ है उस नाम के सितारे को भूल गये हो। जो मेहनत का कार्य है वह भूल गये हो। याद करो अपने कर्तव्य को। बापदादा के उम्मीदें के सितारे। बापदादा के जो गाये हुए हैं वही कार्य अब रहा हुआ है? बापदादा जो उम्मीदें बच्चों से रखते हैं वह कार्य पूरा किया हुआ है? बापदादा एक-एक सितारे में यही उम्मीद रखते हैं कि एक-एक अनेकों को परिचय देकर लायक बनायें। एक से ही अनेक बनने हैं। यह चेक करो कि हम ऐसे बने हैं। अनेकों को बनाया है? उसमें भी क्वालिटी तो बन रहे हैं। क्वालिटी बनाना है। क्वालिटी बनाना सहज है लेकिन क्वालिटी वाले बनाना — यह उम्मीद बापदादा सितारों में रखते हैं। अभी यह कार्य रहा हुआ है। क्वालिटी बनाना है। क्वालिटी बनाना सहज है। लेकिन क्वालिटी वाले बनाना यह उम्मीद बापदादा सितारों में रखते हैं। अभी यह कार्य रहा हुआ है। क्वालिटी बनाना है। क्वालिटी बनाना यह तो चल रहा है। लेकिन अभी ऐसी क्वालिटी वाली आत्मायें बनाने की सर्विस रही हुई है। क्वालिटी वाली एक आत्मा क्वालिटी को आपेही लायेगी। एक क्वालिटी वाला अनेकों को ला सकते हैं। क्वालिटी, क्वालिटी को ला सकती हैं। अभी यही कार्य जो रहा हुआ है उसको पूरा करना है। अपनी सर्विस की क्वालिटी से आप खुद सन्तुष्ट रहते हो? क्वालिटी को देख खुश तो होते हो लेकिन क्वालिटी को देख सर्विस से सन्तुष्ट होना है। क्वालिटी कैसे लायेंगे? जितनी-जितनी जिसमें डिवाइन क्वालिटी होगी उतना ही क्वालिटी वालों को लायेगी। कई बच्चों को सभी प्रकार की मेहनत बहुत करनी पड़ती है। अपने पुरुषार्थ में भी तो सर्विस में भी। कोई को ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है कोई को कम। इस कारण क्या है? कभी उसी को ही मेहनत लगती है कभी फिर उन्हीं को ही सहज लगता है। यह क्यों? धारणा की कमी के कारण मेहनत लगती है? कई कर्तव्यों में तो लोग कह देते हैं कि इनके भाग्य में ही नहीं है। यहाँ तो ऐसे नहीं कहेंगे। किस विशेष कमी के कारण मेहनत लगती है? श्रीमत पर चलना है। फिर भी क्यों नहीं चल पाते? कोई भी कार्य में चाहे पुरुषार्थ, चाहे



सर्विस में मेहनत लगने का कारण यह है कि बातें तो सभी बुद्धि में हैं लेकिन इन बातों की महीनता में नहीं जाते। महीन बुद्धि को कभी मेहनत नहीं लगती। मोटी बुद्धि कारण बहुत मेहनत लगती है। श्रीमत पर चलने के लिए भी महीन बुद्धि चाहिए। महीनता में जाने का अभ्यास करना है। दूसरे शब्दों में यह कहेंगे कि जो सुना है वह करना है अर्थात् उसकी महीनता में जाना है। जैसे दही को बिलोरकर महीन करते हैं तब उसमें मक्खन निकलता है। तो यह भी महीनता में जाने की बात है। महीनता की कमी के कारण मेहनत होती है। महीनता में जाने की बजाए उस बात को मोटे रूप में देखते हैं। सर्विस के समय भी महीन बुद्धि हो, ज्ञान की महीनता में जाकर उसको सुनायें और उसज्ञान की महीनता में ले जायें तो उनको भी मेहनत कम लगे। और अपने को भी कम लगे। इस महीनता की ही कमी है। अब यही पुरुषार्थ करना है।

शारीरिक शक्ति भी कब आती है? जब भोजन महीन रूप से खाओ, तो उस भोजन की शक्ति बनती है। भोजन का महीन रूप क्या बनता है? खून। जब खून बन जाता है तब शक्ति आ जाती है। तो अब सिर्फ बाहर के, ऊपर के रूप को न देखते हुए अन्दर जाने की कोशिश करो। जितना हर बात में अन्दर जायेंगे, तब रत्न देखने में आयेंगे। और हर एक बात की वैल्यू का पता पड़ेगा। जितना ज्ञान की वैल्यू, सर्विस की वैल्यू का मालूम होगा उतना आप वैल्यूएबुल रत्न बनेंगे। ज्ञान रत्नों की वैल्यू कम करते हो तो खुद भी वैल्यूएबुल नहीं बन सकते। एक-एक रत्न की वैल्यू को परखने की कोशिश करो। आप बापदादा के वैल्यूएबुल रत्न हो ना! वैल्यूएबुल रत्न को क्या किया जाता है? (छिपाकर रखना होता है) बापदादा के जो वैल्यूएबुल रत्न हैं उन्हीं को बापदादा छिपाकर रखते हैं। माया से छिपाते हैं। माया से छिपाकर फिर कहाँ रखते हैं? जितना-जितना जो अमूल्य रत्न होंगे उतना-उतना बापदादा के दिल तख्त पर निवास करेंगे। जब दिल तख्तनशीन बनेंगे तब राज्य के तख्तनशीन बनेंगे। तो संगमयुग का कौन सा तख्त है? तख्त है वा बेगर हो? संगमयुग पर कौनसा तख्त मिलता है। बापदादा के दिल का तख्त। यह सारे जहान के तख्तों से श्रेष्ठ है। कितना भी बड़ा तख्त सतयुग में मिले लेकिन इस तख्त के आगे वह क्या है? इस तख्त पर रहने से माया कुछ नहीं कर सकती। इस पर उतरना चढ़ना नहीं पड़ेगा। इस पर रहने से माया के सर्व बन्धनों से मुक्त रहेंगे। अच्छा।

### फर्श से अर्श पर जाने की युक्तियाँ

17.11.69

यहाँ भट्टी में किस लिए आये हो? देह में रहते विदेही हो रहने के अभ्यास के लिये। जब से यहाँ पाँव रखते हो तब से ही यह स्थिति होनी चाहिए। जो लक्ष्य रखा जाता है उसको पूर्ण करने के लिए अभ्यास और अटेन्शन चाहिए। बापदादा हरेक को नई बात के लिये ही बुलाते हैं। अधर कुमारों को विशेष इसलिए बुलाया है — पहले तो अपना जो गृहस्थ व्यवहार बनाया है उसमें जो उल्टी सीढ़ी चढ़ी है, उस उल्टी सीढ़ी से नीचे उतरने के लिए बुलाया है। और उल्टी सीढ़ी से उतार कर फिर किसमें चढ़ाना है? अर्श से फर्श पर, फिर फर्श से अर्श पर। उल्टी सीढ़ी का कुछ न कुछ जो ज्ञान रहता है, उस ज्ञान से अज्ञानी बनाने के लिये और जो सत्य ज्ञान है उनकी पहचान देकर ज्ञान-स्वरूप बनाने के लिए बुलाया है। पहले उतारना है फिर चढ़ाना है। जब तक पूरे उतरे नहीं हैं तो चढ़ भी नहीं सकते। सभी बातों में अपने को उतारने के लिये

तैयार हो? कितनी बड़ी सीढ़ी से उतरना है? उल्टी सीढ़ी कितनी लम्बी है? अभी तक जो पुरुषार्थ किया है, उसमें समझते हो कि पूरे ही सीढ़ी उतरे हैं कि कुछ अभी तक उतर रहे हो? पूरी जब उतर जायेंगे तो फिर चढ़ने में देरी नहीं लगेगी लेकिन उतरते-उतरते कहाँ न कहाँ ठहर जाते हो। तो अब समझा किस लक्ष्य से बुलाया है? 63 जन्मों में जो कुछ उल्टी सीढ़ी चढ़े हो वह पूरी ही उतरनी पड़े। फिर चढ़ना भी है। उतरना सहज है वा चढ़ना सहज है? उतरना सहज है वा उतरना भी मुश्किल है? अभी आप जो पुरुषार्थ कर रहे हो वह उतर कर चढ़ने का कर रहे हो? कि सिर्फ चढ़ने का कर रहे हो? कुछ मिटा रहे हो कुछ बना रहे हो। दोनों काम चलता है ना। आपको मालूम है लास्ट पौढ़ी (सीढ़ी) कौनसी उतरनी है? इस देह के भान को छोड़ देना है। जैसे कोई शरीर के वस्त्र उतारते हो तो कितना सहज उतारते हो। वैसे ही यह शरीर रूपी वस्त्र भी सहज उतार सको और सहज ही समय पर धारण कर सको, किसको यह अभ्यास पूर्ण रीति से सीखना है। लेकिन कोई-कोई का यह देह अभिमान क्यों नहीं टूटता है? यह देह का चोला क्यों सहज नहीं उतरता है? जिसका वस्त्र तंग, टाइट होता है तो उतार नहीं सकते हैं। यह भी ऐसे ही है। कोई न कोई संस्कारों में अगर यह देह का वस्त्र चिपका हुआ है अर्थात् तंग, टाइट है, तब उतरता नहीं है। नहीं तो उतारना, चढ़ाना वा यह देह रूपी वस्त्र छोड़ना और धारण करना बहुत सहज है। जैसे कि स्थूल वस्त्र उतारना और पहनना सहज होता है। तो यही देखना है कि यह देह रूपी वस्त्र किस संस्कार से लटका हुआ है। जब सभी संस्कारों से न्यारा हो जायेंगे तो फिर अवस्था भी न्यारी हो जावेगी। इसलिए बापदादा भी कई बार समझाते हैं कि सभी बातों में इजी रहो। जब खुद सभी में इजी रहेंगे तो सभी कार्य भी इजी होंगे। अपने को टाइट करने से कार्य में भी टाइटनेस आ जाती है। वैसे तो जो इतने समय से पुरुषार्थ में चलने वाले हैं उन्होंने को अब बहुत ही कर्तव्य में न्यारापन आना ही चाहिए। अभी इस भट्टी में जो भी टाइटनेस है वह भी, और जो कुछ उल्टी सीढ़ी की पौढ़ियां रही हुई हैं, वह उतारना भी और फिर लिफ्ट में चढ़ना भी। लेकिन लिफ्ट में बैठने के लिये क्या करना पड़ेगा? लिफ्ट में कौन बैठ सकेंगे?

बाप के लिये सारी दुनिया में लायक बच्चे ही श्रेष्ठ सौगात है। तो लिफ्ट में चढ़ने के लिये बाप की गिफ्ट बनना और फिर जो कुछ है वह भी गिफ्ट में देना पड़ेगा। गिफ्ट देनी भी पड़ेगी और बाप की गिफ्ट बनना भी पड़ेगा तब लिफ्ट में बैठ सकेंगे। समझा? अभी देखना है दोनों काम किये हैं गिफ्ट भी दी है और गिफ्ट बने भी हैं? गिफ्ट को बहुत सम्भाला जाता है और गिफ्ट को शोकेस में सजाकर रखते हैं। जैसी जैसी गिफ्ट वैसी-वैसी शोकेस में आगे-आगे रखते हैं। आप सभी भी अपने आप को ऐसी गिफ्ट बनाओ जो लिफ्ट भी मिल जाये और इस सृष्टि के शोकेस में सभी से आगे आ जाओ। तो शोकेस में सभी से आगे रहने के लिये अधरकुमारों को दो विशेष बातों का ध्यान में रखना पड़ेगा। शोकेस में चीज रखी जाती है, उसमें क्या विशेषता होती है? (अट्रैक्टिव) एक तो अपने को अट्रैक्टिव बनाना पड़ेगा और दूसरा एक्टिव। यह दोनों विशेषताएं खास अधरकुमारों को अपने में भरनी हैं। यह दोनों गुण आ जायेंगे तो फिर और कुछ रहेगा नहीं। कहां-कहां एक्टिव बनने में कमी देखने में आती है। तो इस भट्टी से विशेष कौनसी छाप लगाकर जायेंगे? यही दो शब्द सुनाया- अट्रैक्टिव और एक्टिव। अगर यह छाप

लगाकर जायेंगे तो आपकी एक्टिविटी भी बदली होगी। जितनी-जितनी यह छाप वा ठप्पा पक्का लगाकर जायेंगे उतनी एक्टिविटी भी पक्की और बदली हुई देखने में आयेगी। अगर ठप्पा कुछ ढीला लगाकर जायेंगे तो फिर एक्टिविटी में चेंज नहीं देखने में आयेगी। यह तो सुना था ना-भट्टी में आना अर्थात् अपना रूप रंग दोनों बदलना है।

भट्टी में जो चीज आती है, उनकी जो बुराई होती है वह गल जाती है। जो असली रूप है, असली जो कर्तव्य है वह यहाँ से लेकर के जाना। वह कौनसा रूप है? क्या बदलेंगे? अभी रंग बदलते रहते हैं फिर एक ही रंग पक्का चढ़ जायेगा जिसके ऊपर और कोई रंग चढ़ नहीं सकता और जिस रंग को कोई मिटा नहीं सके और न मिट सके, न और कोई रंग चढ़ सके। सभी बातों में एक्टिव होना है। जैसा समय, जैसी सर्विस उसमें एवररेडी। कोई भी कार्य आता है, तो एक्टिव जो होता है, उस कार्य को शीघ्र ही समझ कर और सफलता को प्राप्त कर लेता है। जो एक्टिव नहीं होते तो पहले कार्य को सोचते रहते हैं। सोचते-सोचते समय भी गवांयेंगे, सफलता भी नहीं होगी। एक्टिव अर्थात् एवररेडी। और वह हर कार्य को परख भी लेगा। उसमें जुट भी जायेगा। और सफलता भी पा लेगा। तीनों बातें उसमें होंगी। जिसमें भारीपन होता है उनको एक्टिव नहीं कहा जाता। पुरुषार्थ में भारी, अपने संस्कारों में भारी, उनको एक्टिव नहीं कहा जायेगा। एक्टिव जो होगा वह एवररेडी और इजी होगा। खुद इजी बनने से सब कार्य भी इजी, पुरुषार्थ भी इजी हो जाता है। खुद इजी नहीं बनते तो पुरुषार्थ और सर्विस दोनों इजी नहीं होती। मुश्किलातों का सामना करना पड़ता है। सर्विस मुश्किल नहीं लेकिन अपने संस्कार, अपनी कमजोरियां मुश्किल के रूप में देखने में आती हैं। पुरुषार्थ भी मुश्किल नहीं। अपनी कमजोरियां मुश्किल बना देती हैं। नहीं तो कोई को सहज, कोई को मुश्किल क्यों भासता। अगर मुश्किल ही है तो सभी को सभी बातें मुश्किल हो। लेकिन वही बात कोई को मुश्किल कोई को सहज क्यों? अपनी ही कमजोरियां मुश्किलात के रूप में आती हैं। इसलिये यह दो बातें धारण करनी हैं।

अट्रैक्टिव भी तब बन सकेंगे जब पहले अपने में विशेषताएं होंगी। आकर्षित बनने लिये हर्षित भी रहना पड़ेगा। हर्षित का अर्थ ही है अतीन्द्रिय सुख में झूमना। ज्ञान को सुमिरण करके हर्षित होना। अव्यक्त स्थिति का अनुभव करते अतीन्द्रिय सुख में झूमना। इसको कहा जाता है हर्षित। हर्षित भी मन से और तन से दोनों से होना है। ऐसा जो हर्षित होता है वही आकर्षित होता है। प्रकृति और माया के अधीन न होकर दोनों को अधीन करना चाहिए। अधीन हो जाने के कारण अपना अधिकार खो लेते हैं। तो अधीन नहीं होना है, अधीन करना है तब अपना अधिकार प्राप्त करेंगे और जितना अधिकार प्राप्त करेंगे उतना प्रकृति और लोगों द्वारा सत्कार होगा तो सत्कार कराने लिये क्या करना पड़ेगा? अधीनपन छोड़कर अपना अधिकार रखो। अधिकार रखने से अधिकारी बनेंगे। लेकिन अधिकार छोड़ कर के अधीन बन जाते हो। छोटी-छोटी बातों के अधीन बन जाते हो। अपनी ही रचना के अधीन बन जाते हैं। लौकिक बच्चे तो भल हैं लेकिन अपनी ही रचना अर्थात् संकल्पों के अधीन हो जाते हैं। जैसे लौकिक रचना से अधीन बनते हो वैसे ही अब भी अपनी रचना संकल्पों के भी अधीन बन जाते हो। अपनी रचना कर्मइन्द्रियों के भी अधीन बन जाते हो। अधीन बनने से ही अपना जन्म सिद्ध अधिकार खो लेते हो ना। तो बच्चे बने और

अधिकार हुआ। सर्वदा सुख, शान्ति और पवित्रता का जन्म सिद्ध अधिकार कहते हो ना। अपने आप से पूछो कि बच्चा बना और पवित्रता, सुख, शान्ति का अधिकार प्राप्त किया। अगर अधिकार छूट जाता है तो कोई बात के अधीन बन जाते हो। तो अब अधीनता को छोड़ो, अपने जन्म सिद्ध अधिकार को प्राप्त करो। यह जो कहते हो कब प्रभाव निकलेगा? यह प्रभाव भी क्यों नहीं निकलता कारण क्या? क्योंकि अब तक कई बातों में खुद ही प्रभावित होते रहते हो। तो जो खुद प्रभावित होता रहता है उनका प्रभाव नहीं निकलता। प्रभाव चाहते हो तो इन सभी बातों में प्रभावित नहीं होना। फिर देखो कितना जल्दी प्रभाव निकलता है। अपनी एक्टिविटी से अन्दाजा निकाल सकते हो। ऐसा सौभाग्य सारे कल्प में एक ही बार मिलता है। सतयुग में भी लौकिक बाप के साथ रहेंगे। पारलौकिक बाप के साथ नहीं। 84 जन्मों में कितना श्रृंगार किया होगा। भिन्न-भिन्न प्रकार के बहुत श्रृंगार किये? बापदादा का स्नेह यही है कि बच्चों को श्रृंगार कर शोकेस में सृष्टि के सामने लायें। जब सभी सम्पूर्ण बनकर शोकेस अर्थात् विश्व के सामने आयेंगे तो कितने सजे हुए होंगे। सतयुग का श्रृंगार नहीं। गुणों के गहने धारण करने हैं।

### लौकिक को अलौकिक में परिवर्तन करने की युक्तिया

28.11.69

आज भट्टी का कौन-सा दिन है? आज है सम्पूर्ण समर्पण होने का दिन। बाप-दादा को ऐसा समझकर बुलाया है। सम्पूर्ण समर्पण होने के लिये सभी तैयार हो वा सम्पूर्ण हो चुके हो? जो सम्पूर्ण हो चुके हैं आज उन्हीं का समारोह है। यह सभी के सभी सम्पूर्ण समर्पण हुए हैं। सम्पूर्ण समर्पण जो हो जाता है उसकी दृष्टि क्या होती है? (शुद्ध दृष्टि, शुद्ध वृत्ति हो जाती है) लेकिन किस युक्ति से वह वृत्ति-दृष्टि शुद्ध हो जाती है? एक ही शब्द में यह कहेंगे कि दृष्टि और वृत्ति में रूहानियत आ जाती है। अर्थात् दृष्टि वृत्ति रूहानी हो जाती है। जिस्म को नहीं देखते हैं तो शुद्ध, पवित्र दृष्टि हो जाती है। जड़ चीज़ को आँखों से देखेंगे ही नहीं तो उस तरफ वृत्ति भी नहीं जायेगी। दृष्टि नहीं जायेगी तो वृत्ति भी नहीं जायेगी। दृष्टि देखती है तब वृत्ति भी जाती है। रूहानी दृष्टि अर्थात् अपने को और दूसरों को भी रूह देखना चाहिए। जिस्म तरफ देखते हुए भी नहीं देखना है, ऐसी प्रैक्टिस होनी चाहिए। जैसे कोई बहुत गूढ़ विचार में रहते हैं, कुछ भी करते हैं, चलते, खाते-पीते हैं लेकिन उनको मालूम नहीं पड़ता है कि कहाँ तक आ पहुँचा हूँ, क्या खाया है। इसी रीति से जिस्म को देखते हुए भी नहीं देखेंगे और अपने उस रूह को देखने में ही बिज़ी होंगे तो फिर ऐसी अवस्था हो जायेगी जो कोई भी आपसे पूछेंगे यह कैसी थी तो आपको मालूम नहीं पड़ेगा। ऐसी अवस्था होगी। लेकिन वह तब होगी जब जिस्मानी चीज़ को देखते हुए उस जिस्मानी लौकिक चीज़ को अलौकिक रूप में परिवर्तन करेंगे। अपने में परिवर्तन करने के लिए जो लौकिक चीज़ें देखते हो या लौकिक सम्बन्धियों को देखते हो उन सभी को परिवर्तन करना पड़ेगा। लौकिक में अलौकिकता की स्मृति रखेंगे। भल लौकिक सम्बन्धियों को देखते हो लेकिन यह समझो कि अब हमारी यह भी ब्रह्मा बाप के बच्चे पिछली बिरादरी है। ब्रह्मा वंश तो है ना। क्योंकि ब्रह्मा दी क्रियेटर है, तो भक्त, ज्ञानी व अज्ञानी हैं लेकिन बिरादरी तो वह भी हैं ना। तो लौकिक सम्बन्धी भी ब्रह्मावंशी हैं लेकिन वह नजदीक सम्बन्ध के हैं, वह दूर के हैं। इसी रीति कोई भी लौकिक चीज़ देखते हो, दफ्तर में काम करते हो, बिज़नेस करते

हो, खाना खाते हो, देखते हो, बोलते हो लेकिन एक-एक लौकिक बात में अलौकिकता हो। इसी शरीर के कार्य के लिए चल रहे हो तो साथ-साथ समझो इन शारीरिक पाँव द्वारा लौकिक कार्य तरफ जा रहा हूँ लेकिन बुद्धि द्वारा अपने अलौकिक देश, कल्याण के कार्य के लिए जा रहा हूँ। पाँव यहाँ चल रहे हैं लेकिन बुद्धि याद की यात्रा में। शरीर को भोजन दे रहे हैं लेकिन आत्मा को फिर याद का भोजन देते जाओ। यह याद भी आत्मा का भोजन है। जिस समय शरीर को भोजन देते हो ऐसे ही शरीर के साथ में आत्मा को भी शक्ति का, याद का बल देना है। अपने को परिवर्तन में लाने के लिए क्या करना पड़ेगा? हरेक चीज को लौकिक से अलौकिकता में परिवर्तन करना है। जिससे लोगों को मालूम हो कि यह कोई विशेष अलौकिक आत्मा है। लौकिक में रहते हुए भी हम, लोगों से न्यारे हैं। अपने को आत्मिक रूप में न्यारा समझना है। कर्तव्य से न्यारा होना तो सहज है, उससे दुनिया को प्यारे नहीं लगेंगे, दुनिया को प्यारे तब लगेंगे जब शरीर से न्यारी आत्मा रूप में कार्य करेंगे। तो सिर्फ दुनिया की बातों से ही न्यारा नहीं बनना है, पहले तो अपने शरीर से न्यारा बनना है। जब शरीर से न्यारे होंगे तब प्यारे होंगे। अपने मन के प्रिय, प्रभु प्रिय और लोक प्रिय भी बनेंगे। अभी लोगों को क्यों नहीं प्रिय लगते हैं? क्योंकि अपने शरीर से न्यारे नहीं हुए हो। सिर्फ देह के सम्बन्धियों से न्यारे होने की कोशिश करते हो तो वह उलहने देते। खुद को क्या चेन्ज किया है? पहले देह के भान से न्यारे नहीं हुए हो तब तक उलहना मिलता है। पहले देह से न्यारे होंगे तो उलहने नहीं मिलेंगे। और ही लोकप्रिय बन जायेंगे। कई अपने को देख बाहर की बात को देख लेते हैं और बातों को पहले चेन्ज कर लेते हैं, अपने को पीछे चेन्ज करते हैं। इसलिए प्रभाव नहीं पड़ता है। प्रभाव डालने के लिए पहले अपने को परिवर्तन में लाओ। अपनी दृष्टि, वृत्ति, स्मृति को, सम्पत्ति को, समय को परिवर्तन में लाओ तब दुनिया को प्रिय लेगेंगे। क्योंकि जब सम्पूर्ण हो गये तो उसके बाद फिर क्या करना है? बोलना-चलना कैसे हो वह बता रहे हैं। जैसे अपकी यादगार शास्त्रों में बताते हैं — सम्पूर्ण समर्पण किसने और किसको कराया और कितने में कराया? यादगार की याद आती है? (राजा जनक का मिसाल) उनको तो बच्चों ने कराया। लेकिन बाप ने कराया ऐसा भी यादगार है। बतलाते हैं ना कि वामन अर्थात् छोटा। सभी से छोटा रूप किसका है? आत्मा और परमात्मा का, तो बाप ने आकर माया बली, जो बलवान है उससे तीन पैर में सभी कुछ लिया अर्थात् सम्पूर्ण समर्पण बनाया। आप लोगों को भी सम्पूर्ण समर्पण करना है अर्थात् जो भी माया का बल है वह सभी कुछ त्यागना है। माया का बली नहीं बनना है लेकिन ईश्वरीय शक्ति में बलवान बनना है। तो जैसे वह तीन पैर दिखाते हैं। यह कौन सी तीन बातें सुनाई जाती हैं जिससे सम्पूर्ण समर्पण आ जाता है। मन्सा, वाचा और कर्मणा के लिए शिक्षा कौनसी है? अगर वह तीन बातें याद रखेंगे तो सम्पूर्ण समर्पण हो ही जायेंगे। वह तीन बातें कौनसी? एक तो देह सहित सभी सम्बन्धों का त्याग। मामेकम् याद करो। यह तो हो गया मन्सा। वाचा के लिए क्या शिक्षा मिलती है? हर समय जैसे मोती चुगते हैं, इस रीति मुख से रत्न ही निकलें। एक दो को पत्थर नहीं लेकिन ज्ञान रत्नों का दान देना है। और कर्मणा के लिए यही याद रखो कि जो कर्म मैं करूँगा मुझे देख सभी करेंगे। दूसरी बात कि जो करेंगे सो पायेंगे। यह दोनों बातें याद रहने से कर्मणा में बल मिलता है अर्थात् जो सभी के सम्पर्क में आते हैं उसमें बल मिलता है।

समझा? मन्सा, वाचा, कर्मणा के लिए इन मुख्य बातों को याद रखें तो फिर सम्पूर्ण समर्पण जो हुए हो उसको अविनाशी बना सकेंगे। ऐसे नहीं कि यहाँ सम्पूर्ण समर्पण का नशा चढ़ा है वह बाद में कम हो जाये। अगर यह पक्का याद रखेंगे कि हम तो सम्पूर्ण समर्पण हो ही गये तो यह अविनाशी याद आपको अविनाशी बनाकर रखेगी। अगर आप कुछ डगमग हुए तो फिर समस्या डगमग करेगी। आपके डगमग होने को और समस्याओं को देखते हुए लोग भी उसका तमाशा देखेंगे। बापदादा तो देखते रहते हैं।

साथ किसके रहेंगे? साथी अंगुली छोड़ दे तो क्या करेंगे? सभी अपना साथ निभायें। बापदादा तो किस न किस रूप से साथ निभाने अर्थात् अंगुली पकड़ने की कोशिश करते रहते हैं। इतने तक जो बिल्कुल साँस निकलने तक, साँस निकलने वाला भी होता है तो भी जान भरते हैं। लेकिन कोई आक्सीजन लगाने ही न दे, नली को ही निकाल दे तो क्या करेंगे? अगर बापदादा का सहयोग चाहिए तो वास्तव में सहयोग कोई माँगने की चीज नहीं है। सहयोग, स्नेही को स्वतः ही प्राप्त होता है। आप बापदादा का स्नेही बनो तो सहयोग स्वतः ही प्राप्त होगा। माँगने की आवश्यकता नहीं। आधा कल्प माँगते रहे, भक्त रूप में। अभी बच्चा बनकर भी माँगते रहे तो बाकी फर्क क्या रहा भक्त और बच्चों में? लेकिन कारण क्या है कि अज्ञानी होकर सहयोग माँगते हो अधिकारी समझो तो फिर माँगने की आवश्यकता नहीं। बीती सो बीती। जो बीत चुका उसका चिन्तन न करके, बीती हुई बातों से शिक्षा लेकर आगे के लिए सावधान। अगर बीती हुई बातों को सोचते रहेंगे तो यह भी एक समस्या हो जायेगी। समस्यायें तो बहुत आती हैं, यह भी एक नई समस्या खड़ी कर देंगे। बीती को परिवर्तन में लाने, बल भरने के लिए-उस रूप से सोचो। अगर यह सोचेंगे कि यह क्यों, कैसे हुआ, अब कैसे होगा, जम्प दे सकूँगा या नहीं। क्वेश्चन नहीं करो। क्वेश्चन मार्क के बदली फुलस्टॉप, बिन्दी लगाओ। बिन्दी लगाना सहज होता है। क्वेश्चन-मार्क तो कोई लिख सके वा नहीं। लेकिन यहाँ क्वेश्चन लगाना सभी को आता है। बिन्दी लगाते जाओ तो बिन्दी रूप में स्थित हो सकेंगे। म्युज़ियम या प्रदर्शनी में आप लोग समझाने के बाद फिर क्या करते हो? म्युज़ियम व प्रदर्शनी के पश्चात् क्या करना है वह पर्चा सभी को देते हो। तो बापदादा भी आज पूछते हैं कि आप भट्टी के पश्चात् क्या करेंगे? यज्ञ के कार्य को कैसे आगे बढ़ायेंगे? अपनी उन्नति का साधन क्या करेंगे? दैवी गुण धारण करना, स्नेही बनना — यह तो करना ही है लेकिन प्रैक्टिकल रूप से क्या देंगे? जैसे आप लोगों ने सुनाया भी कि अपने, बापदादा के, परिवार के स्नेही-सहयोगी बनेंगे। लेकिन वह भी किन- किन बातों में बनना है। मन्सा-वाचा-कर्मणा के साथ-साथ तन-मन-धन तीनों रूप से अपने को चेन्ज करना है। मददगार और वफादार। जब दोनों बातें होंगी तब बापदादा और परिवार के स्नेही और सहयोगी बन सकेंगे। जो सहयोगी होंगे उनकी परख क्या होगी? वह परिवार और बापदादा के विचारों और जो कर्म होते हैं उनमें एक दो के समीप होंगे। एक दो के मत के समीप आते जायेंगे तो फिर मतभेद खत्म हो जायेगा। एक तो मददगार और वफादार उसका तरीका भी बताया, दूसरी बात यह है कि जो भी सम्पूर्ण समर्पण होते हैं उनको अपना तन-मन-धन और समय यह चारों चीजें कहाँ लगानी चाहिए? यह तो जरूर है कि प्रवृत्ति मार्ग तरफ भी ध्यान देना है लेकिन यह जो चारों चीजें देते हो उसके लिए आप के मन में जजमेन्ट ठीक है कि हम यथार्थ रीति प्रयोग कर रहे हैं? सम्पूर्ण

समर्पण आत्मा को जो सचमुच तन, मन, धन और समय देना चाहिए इस प्रमाण दे रहे हैं? यह पोतामेल भी निकालो कि तन, मन, धन और समय का प्रयोग कहाँ करते हैं? जैसे अपने घर का पोतामेल रखते हो वैसे जो सम्पूर्ण समर्पण हुये हैं उन्हीं को यह भी पोतामेल निकालना चाहिए। तन भी कहाँ और कैसे लगाया? यह शार्ट में लिखना है लेकिन स्पष्ट। क्योंकि डिटेल भी होता है परन्तु स्पष्ट नहीं होता। इसलिए शार्ट भी हो और स्पष्ट भी हो। जितना-जितना शार्ट आर स्पष्ट लिख सकेंगे उतना आन्तरिक स्थिति भी स्पष्ट और क्लीयर होगी। संकल्प को शार्ट करेंगे तो समाचार भी शार्ट होगा और पुरुषार्थ की लाइन क्लीयर होगी। तो समाचार भी स्पष्ट होगा। इसमें सारा पोतामेल आ जायेगा। तीसरी बात यह याद रखने की है कि मन्सा, वाचा, कर्मणा जो कुछ भी अब तक पुरुषार्थ की कमी के कारण चलता रहा, उसको बुद्धि से बिल्कुल ही भूल जाओ। जैसा कि अब नया जन्म लिया है। पुरुषार्थ में जो बातें कमजोरी की हैं वह सभी यहाँ ही छोड़कर जानी है। फिर पत्रों में यह नहीं आना चाहिए कि पिछले संस्कारों के कारण यह हो गया। जबकि सम्पूर्ण समर्पण हो गये तो ऐसे ही सोचना कि दान दी हुई चीज है, जिसको अगर फिर स्वीकार करेंगे तो उसका परिणाम क्या होगा। यह स्मृति रखने से चारों बातें चेन्ज हो जायेंगी। मुख से कभी ऐसे बोल नहीं निकलनी चाहिए। समस्यायें सामने क्यों आती हैं क्योंकि ज्ञान की कई बातें उल्टे रूप में अन्दर में धारण कर ली हैं। कोई भूल होगी तो कहेंगे कि सम्पूर्ण तो बने नहीं हैं। अभी तो समय पड़ा है। पुरुषार्थी हैं। पुरुषार्थी को भूलें करने की छुट्टी नहीं है। लेकिन आजकल ऐसे समझ बैठे हैं कि पुरुषार्थी अर्थात् भूलें माफ हैं। ये ऐसा करता है तो हमको करना पड़ता है। यह ज्ञानी के बदले अज्ञानी हो गया। याद क्या रखना है, जो करेगा सो पायेगा। मैं जो करूँगा मुझे देख और करेंगे। उनको देख मुझे नहीं करना है। मैं ऐसा करूँ, जो मुझे देख और भी ऐसा करें। तो यह छोटी-छोटी बातें उल्टे रूप में धारण कर ली हैं। ज्ञान का सही एडवान्टेज जो लेना चाहिए उसके बदले उल्टे रूप से प्रयोग करने से पुरुषार्थ में कमजोरी आती है। ये पुरुषार्थहीन की बातें हैं लेकिन समझते हैं कि यही पुरुषार्थी जीवन है। इसलिए यह तो ज्ञान की पाइन्ट्स अपने पुरुषार्थ की कमी को छिपाने के साधन बनाकर रखे हैं। इन साधनों को मिटाओ। तो सभी समस्यायें आपेही खत्म हो जायेंगी। चार शक्तियों को धारण करना है। है तो एक ही ईश्वरीय शक्ति। लेकिन स्पष्ट करने के लिए कहा जाता है। 1- समेटने की शक्ति अर्थात् शार्ट करने की शक्ति, 2- समाने की शक्ति, 3- सहन करने की शक्ति, 4- सामना करने की शक्ति, लेकिन किसका सामना करना है? बापदादा व दैवी परिवार को नहीं। माया की शक्ति का सामना करने की शक्ति।

यह चारों शक्तियाँ धारण करेंगे तो सम्पूर्ण समर्पण को अविनाशी कायम रख सकेंगे। जैसे कहते हैं ना कि एक तो शार्ट (छोटा) करो और शार्ट (छाँटना) करो। यह करना है, यह सोचना है, यह नहीं, यह बनना है यह नहीं। शार्ट करते जाओ और जितना हो सके शार्ट करो। जो दस शब्द बोलने हैं, उनको शार्ट कर २ शब्दों में रहस्य बताओ तो ऐसे शार्ट करते-करते बिल्कुल शार्ट हो जायेगा। ऐसा पुरुषार्थ इस भट्टी के पश्चात् करना है। एक बात यह भी याद रखना कि जैसे बापदादा ने आप सभी बच्चों को सृष्टि के सामने प्रत्यक्ष किया है तो अब आप बच्चों का भी काम है कि हर कर्तव्य से, हर बात से बापदादा को अनेक आत्माओं के आगे प्रत्यक्ष करना है।

वह है आपका कर्तव्य। यह भी अपना चार्ट देखो कि अब तक हमने बाप का संदेश तो दिया लेकिन उस संदेश से आत्माओं के अन्दर बापदादा के स्नेह और सम्बन्ध को प्रत्यक्ष किया? नहीं। तो वह सर्विस क्या रही? अधूरी सर्विस नहीं करनी है। अभी सम्पूर्ण समर्पण हुए हो तो सर्विस भी सम्पूर्ण करनी है। इसलिए हरेक को यह भी चेक करना है कि आज मैंने मन्सा, वाचा, कर्मणा कितनी आत्माओं के अन्दर बापदादा के स्नेह और सम्बन्ध को कहाँ तक प्रत्यक्ष किया है? सिर्फ संदेश देना सर्विस नहीं। संदेश देना अर्थात् उनको अपने सम्बन्धी बनाना। अपना सम्बन्धी बनाना अर्थात् शिववंशी ब्रह्माकुमार कुमारी बनाना। यह है अपना सम्बन्धी बनाना। अपना सम्बन्धी तब बनायेंगे जब उनको स्नेही बनायेंगे। स्नेही बनने से सम्बन्धी बन जायेंगे। सिर्फ संदेश देना तो चींटी मार्ग की सर्विस है, यह विहंग मार्ग की सर्विस है। दुनिया के अन्दर यह आवाज फैलाओ कि बापदादा अपने कर्तव्य को कैसे गुप्त वेश में कर रहे हैं। उनको इस स्नेह, सम्बन्ध में लाओ। हैं तो सभी आपके सम्बन्धी ना। तो सम्बन्धियों को अपना सम्बन्ध याद दिलाओ। बिछुड़ी आत्माओं को स्नेही बनाओ। अभी सर्विस का गुप्त रूप चल रहा है, प्रत्यक्ष रूप नहीं चल रहा है। म्यूज़ियम में आते हैं बाहर का प्रत्यक्ष रूप और चीज है। लेकिन सर्विस का रूप अभी गुप्त है। सर्विस का रूप जब प्रत्यक्ष होगा तब प्रत्यक्षता होगी। सर्विस कैसे वृद्धि को पाये उसके लिए नये-नये प्लैन्स भी बनाओ। आवाज कैसे हो। बेधड़क होकर सूचना देने, संदेश देने के लिए जाओ। प्रदर्शनी भी करते जाओ लेकिन बाद में उनको जो कहते हो वह तुम भी करो। आपस में मिलकर सोचो। दुनियाँ को यह कैसे मालूम हो कि अभी समय क्या है और कर्तव्य क्या हो रहा है? किसी भी रीति आवाज पहुँच जाये। पेपर द्वारा सर्विस होनी चाहिए, वह हुई नहीं है। एक संगठन के रूप में, एक दो को समझ, सहयोगी बन बेहद की सर्विस में बेहद का रूप लाना है।

इस ग्रुप में इमर्ज रूप में सभी को यह उमंग है कि जैसे बापदादा चाहते हैं वैसे ही हम १०० कर के दिखायेंगे। जैसे यह इमर्ज रूप में है, पूरा हो जायेगा। सभी के मन में जो है कि टोटली लौकिक कार्य से सभी सरेन्डर हो जायें वह दिन भी नज़दीक है। लेकिन वह तब होगा जब मन से सरेन्डर होंगे। फिर लौकिक कार्य से सरेन्डर होने में देरी नहीं लगेगी। इस बारी मन से सरेन्डर हो जाओ। जिसकी रिजल्ट अच्छी देखेंगे उस अनुसार नम्बर देंगे। भट्टी का प्रोग्राम भल हो न हो लेकिन मधुवन तो है ही भट्टी। मधुवन आते रहेंगे और अपना अमर बनने का सबूत देते रहेंगे। सभी से बड़ा सरेन्डर होना है - संकल्पों में। कोई व्यर्थ संकल्प न आये। इन संकल्पों के कारण ही समय और शक्ति वेस्ट होती है। तो संकल्प से भी सम्पूर्ण समर्पण होना है। मन के उमंगों को अब प्रैक्टिकल में लाना है। अच्छा—

**ओम् शान्ति**